रामाश्रम सत्संग प्रकाशन

नवनीत

(भाग १)

रामाश्रम सत्संग (रजि०)
ग़ाज़ियाबाद (उ० प्र०)

Scanned by CamScanner

प्रकाशक :

आचार्य, रामाश्रम सत्संग, (रजि०)
गाज़ियाबाद (उ० प्र०)

प्रथम संस्करण १०००

द्वितीय संस्करण १०००

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक :

विवेक मुद्रणालय,
जी० टी० रोड,
गाज़ियाबाद ।

Scanned by CamScanner

द्वितीय संस्करण के "दो शब्द"

आधुनिक युग में परमसन्त महात्मा श्रीकृष्ण लाल जी महाराज सन्त-मत के महान् आचार्य हुए हैं। आजीवन गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए, ख्याति से दूर रह कर और अपने आपको सेवक कह कर आपने संसार के दीन-दुखियों का उद्धार किया। आप अपने आपको इतना छिपाये हुए रहते थे कि निकटतम प्रेमियों को भी यह नहीं मालूम हो पाता था कि मिट्टी की देह में भगवान् बैठा है। आज, जब वे शरीर से इस संसार में नहीं हैं उनके श्रीमुख से निकली पवित्र वाणी ही महावत है जो जिज्ञासुओं का मार्ग प्रदर्शन करती है। उनके अनेकों प्रवचन 'सन्त-वचन' के नाम से अब तक सात भागों में प्रकाशित हो चुके हैं।

आपका मिशन रामाश्रम सत्संग (रजि०) के नाम से विख्यात है जिसका मुख्य केन्द्र ग़ाज़ियाबाद ,(उ० प्र०) में है और इसकी शाखायें भारतवर्ष में दूर-दूर तक फैली हुई हैं।

जैसे सागर का मंथन करने से उसके तत्व रत्नादिक निकले, जैसे दूध का मंथन करने से उसका तत्व मक्खन (नवनीत) निकलता है वैसे ही आध्यात्म-विद्या के सागर का मंथन करके महात्मा जी ने अपने श्रीमुख से उसका जो तत्व प्रस्फुटित किया वह उन्हीं के शब्दों में इस छोटी सी पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है। जो जिज्ञासु अथवा साधक इसको ध्यान से पढ़कर और मनन करके अपने जीवन में व्यवहारिक रूप देंगे उन्हें आशातीत लाभ होगा।

---दास

करतार सिंह

दिल्ली १-८-८७

Scanned by CamScanner

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
गुरु-सतगुरु	५
प्रेम व दीनता	१७
साधन	२५
उपदेश	५७

Scanned by CamScanner

एक प्रेम के नाते को छोड़कर मैं और किसी नाते को नहीं जानता। केवल प्रेम और वह भी निस्वार्थ प्रेम। जो लोग बिना अपने स्वार्थ के मुझे प्रेम करते हैं, चाहे वे कैसे भी हैं 'उन्हे मैं प्रेम करता हूँ। वे मेरे हैं और मैं उनका। वे सदैव मुझ पर आश्रित रह सकते हैं और वे देखेंगे कि मैं सदैव उसकी सेवा के लिये प्रस्तुत हूँ।

—परमसंत डॉ० श्रीकृष्णलाल जी महाराज

सिकन्दराबाद, उ० प्र०

(जन्म १५-१०-१८९४ निर्वाण १८-५-१९७०)

Scanned by CamScanner

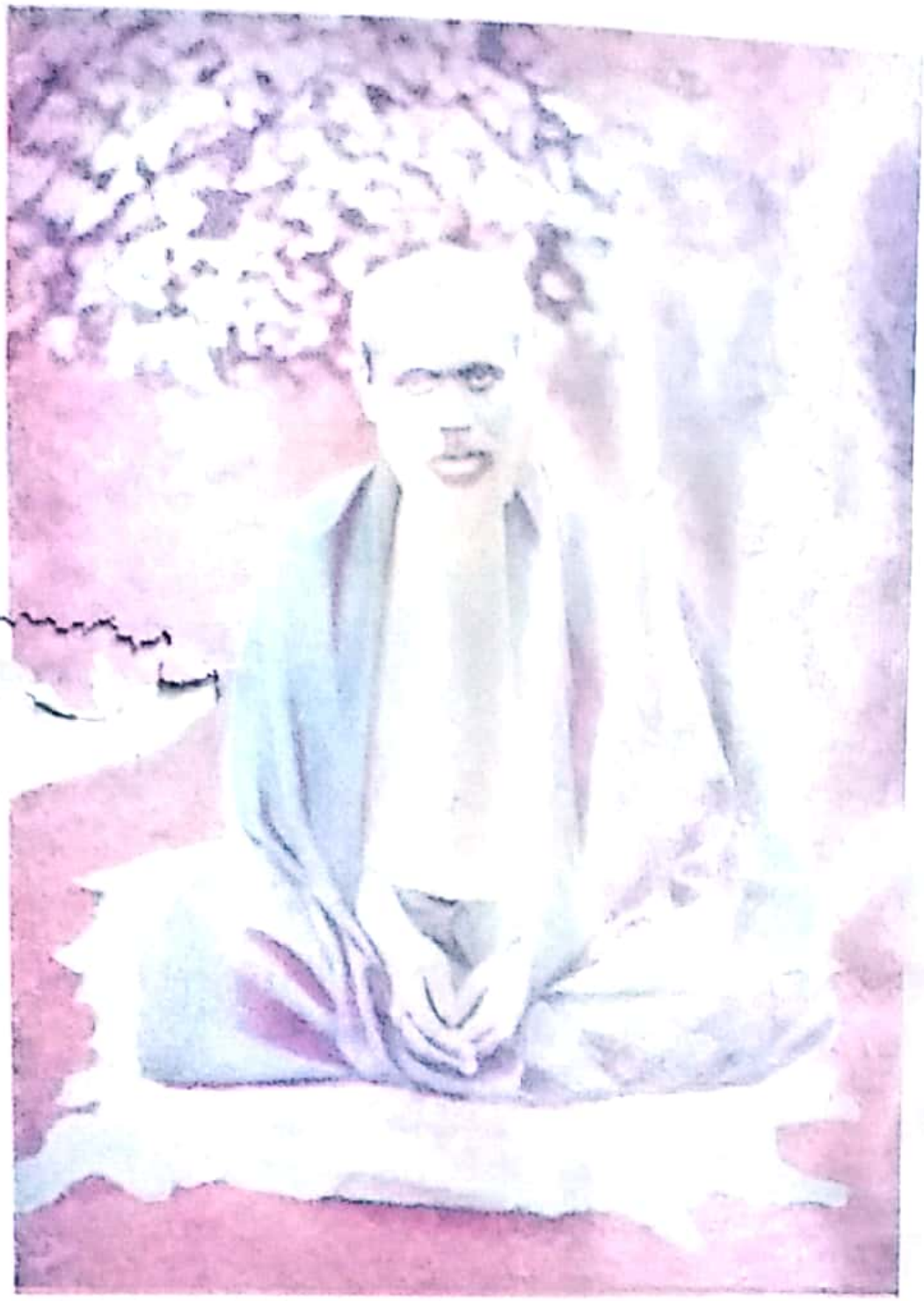

समर्थ गुरु महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (उर्फ लाला जी)
फतहगढ़, उ०प्र० निवासी (जन्म १८७३–निर्वाण १९३१)

Scanned by CamScanner

नवनीत

[१]

गुरु–सतगुरु

गुरु की तलाश में एक जन्म भी लग जाय तो कोई हर्ज नहीं। जब गुरु धारण कर लो तो दरवाज़ा छोड़ कर मत जाओ। तुम किसके शिष्य बनते हो? क्या आदमी के? नहीं, आप तो ईश्वर को गुरु धारण करते हैं। जिस शरीर में ईश्वर बसता है वह तो मिट्टी का बना हुआ है। वह तो मन्दिर है। मन्दिर की पूजा तो नहीं करते, उसके भीतर जो मूर्ति होती है, पूजा उसकी की जाती है।

दो तरह के आदमी होते हैं। एक जिज्ञासु दूसरा सत्सङ्गी। जिज्ञासु वो है जो देख रहा है कि कौन सा रास्ता अपनाऊँ। सत्सङ्गी वह है जिसने रास्ता अपना लिया है। यह बाज़ार नहीं है कि एक दुकान देखी, फिर दूसरी देखी और सब जगह का मज़ा चखते रहे। सत्सङ्ग में शामिल हो जाने के बाद ऐसा करना ग़लत है। लड़की की शादी हो जाने पर जब वह बहू बन कर ससुराल में जाती है तब

Scanned by CamScanner

सास कुछ दिनों उसके पास रहती है और जब बहू बाल-बच्चों वाली हो जाती है और सयानी हो जाती है तब सास उसके पास नहीं रहती। वह अपने घर में स्वतन्त्र है। हमारे सत्सङ्ग का भी यही हाल है। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध ऐसा ही है जैसा पति और पतिव्रता पत्नी का। सत्सङ्ग में शामिल होने से पहले आपको पूरी आज़ादी है कि ख़ूब घूमिये और जहाँ चाहें वहाँ के सत्सङ्ग और उसके अधिष्ठाताओं की जाँच कीजिये। लेकिन जब एक बार इस सत्संग में शामिल हो जायें तब दूसरी जगह नहीं जाना चाहिये वरना नुक़सान हो जायगा।

☼ ☼ ☼

पहली शर्त यह है कि गुरु और शिष्य में परस्पर प्रेम हो, मन की दुई मिटकर एक हो जाय, दोनों का सतोगुणी मन मिल जाय, दोनों का तम और रज ख़त्म हो जाय, तब फ़ायदा होगा वरना (अन्यथा) गुरु कितनी भी कोशिश करे, आत्मा का अनुभव नहीं करा सकता।

☼ ☼ ☼

किसी ऐसे महापुरुष का सहारा लो जो इस रास्ते पर चल चुका हो। केवल इतना करो कि संसार भर की चीज़ों में जो तुम्हारा प्रेम बँटा हुआ है, उसे समेट कर उसके चरणों में लगा दो। यही गुरु धारण करना है। बिना पथ-प्रदर्शक को साथ लिये, बिना गुरु किये, रास्ता तय नहीं

Scanned by CamScanner

होगा। निर्गुण का ध्यान कैसे हो सकता है? इसलिये उस महापुरुष की शरण लो जिसने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया है। उसका स्थूल शरीर मन्दिर है जिसमें निर्गुण परमात्मा विराजता है। उससे प्रेम करने से, उसका ध्यान करने से तुम्हें भी आत्मदर्शन होगा।

☼ ☼ ☼

परमार्थ के काम में जल्दबाज़ी नहीं होती। Full determination (दृढ़ संकल्प) होना चाहिए। कुछ हर्ज नहीं अगर तरक़्क़ी नहीं होती है। जब चल पड़ो तब चलते जाओ, रास्ते से मत हटो, कामयाबी शर्तिया होगी। सभी शुरू में नक़ल (अनुकरण) करते हैं, असल (यथार्थ) तो बाद में आती है। लड़कियाँ बचपन में झूँठा ब्याह रचाती हैं। फिर एक दिन अपना ब्याह भी कर लेती हैं। गुरु के दरवाज़े से न हटे। कहा है--"द्वार धनी के पड़ रहे, धका धनी का खाय।" मुसीबतें आती हैं, गुरु इम्तहान भी लेते हैं, मगर चाहे कुछ भी मिले, सुख या दुख, वह तुम्हारी जान है। सबसे ज़्यादा उसी को अज़ीज़ (सर्वप्रिय) रखो।

☼ ☼ ☼

और तरीक़ों में सिर्फ रास्ता बताया जाता है और अभ्यास कराया जाता है। लेकिन हमारे यहाँ इससे आगे भी कुछ और है। गुरु अपनी कृपा, तवज्जह और इच्छा-शक्ति से शिष्य के सतोगुणी मन को अपने मन में मिलाकर

Scanned by CamScanner

ऊपर ले जाता है जिससे शिष्य की आत्मा थोड़ी देर के लिए शहरी atmosphere (वातावरण) से ऊपर उठकर ब्रह्माण्डी मन का आनन्द लेने लगती है और इससे जल्दी तरक़्क़ी होती जाती है।

गुरु के निजी रूप का (प्रकाश रूप का) नूरानी रूप का ध्यान किया जाता है। चाहे ध्यान में पहले उसका Physical-body (स्थूल शरीर) ही दीखता हो मगर वह नूरानी (प्रकाश रूप) है। अगर गुरु की तसवीर का ध्यान करते हो तो यह मूर्ति-पूजा हो गई। जिस का ध्यान करोगे वही मिलेगा। अगर तस्वीर या मूर्ति का ध्यान करते हो तो मरने के बाद वही मिलेगी। इज्ज़त के तौर पर घर में तस्वीर रख लेना और बात है। सामने बैठकर भी जो ध्यान किया जाता है वह उनके नूरानी रूप (प्रकाश रूप) का ध्यान किया जाता है। वह प्रकाश बराबर सूक्ष्म होता जाता है और आगे जाकर सतपुरुष से मिला देता है।

गुरु में कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितना ही ज्ञान क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो, अगर उसने अपने आप को ईश्वर को समर्पण नहीं किया और ख़ुदी (अहंपना) बाक़ी है तो वह सच्चा गुरु नहीं है। अगर अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जाय तभी ईश्वर दर्शन होते हैं

Scanned by CamScanner

लेकिन शर्त यह है कि पूर्ण श्रद्धा से गुरु के बताये हुए रास्ते पर चलें और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ त्यागने में न हिचकिचाएं, बल्कि खुशी से त्याग दें।

☼ ☼ ☼

दुनियाँ अज्ञान में फँसी है। यहाँ हर काम उल्टा है। यहाँ आदमी की पैदाइश भी उल्टी होती है। इस दुनियाँ से निकलो। मन की हालत को देखते चलो और गुरु की कृपा उनके प्रकाश की धार [फ़ैज़] का अपने ऊपर अनुभव करते रहो। यही सतसङ्ग है। गुरु कृपा तब तक होती है जब तक उसके कहने में चलते हो वरना वह कृपा जाती रहती है। उसकी रज़ा में राज़ी रहो। गुरु का सिर्फ़ एक रूप है। उसका एक ही काम है कि बिछुड़े जीवों को ईश्वर से मिला दे। इसलिये तुम उसके साथ Co-operate [सहयोग] करो। अगर उसके साथ Rebellion [विरोध] करोगे तो फ़ायदा क्या होगा? तुम्हें तोड़ कर रख देगा। जो उसने कहा है उसे दिमाग़ में रखो। ये देखते रहो कि इतना कर आये, इतना और करना है। यही प्रेम का रूप है।

☼ ☼ ☼

प्रकाश रूप के दर्शन गुरु के अन्दर ही होते हैं। गुरु के स्थूल शरीर के अन्दर, पर्दे में क्या है? [१]अन्नमय कोष [२]आत्मा। मिट्टी के शरीर की मूर्ति बनाये ईश्वर बैठा

Scanned by CamScanner

हुआ है। अगर प्रकाश के रूप में दर्शन होते हैं तो रास्ता ठीक है।

✡　✡　✡

सन्त के पास बैठ कर आनन्द का अनुभव होता है। अगर सौभाग्य से ऐसा कोई वक्त का पूरा सन्त मिल जाय, वही गुरु है। वह तुम्हें भवसागर से पार करने आया है। उससे प्रेम करो। अगर तुम्हारी आत्मा दरअसल परमात्मा के पाने की इच्छुक है तो वह उससे चुपट जायेगी।

✡　✡　✡

अगर ठोकरें मारे तो भी गुरु का दरवाज़ा छोड़कर मत जाओ।

✡　✡　✡

हर संत "सतगुरु" नहीं होता है। सतगुरु उसी को कहते हैं जो शिक्षक का काम करता है। जैसे हरेक 'ग्रेजुएट' (स्नातक) टीचर (अध्यापक) नहीं होता। असली टीचर वह है जिसको शिक्षकों और शिष्यों की भलाई इष्ट है, उनसे प्रेम करता है और अपनी तालीम (शिक्षा, विद्या) को प्रवेश कर सकता है।

✡　✡　✡

अधिकार बनाना चाहिए। वह इस तरह बनेगा कि धर्म पर, सच्चाई पर और सन्तों के बताये हुए रास्ते पर चलो। अधिकार और संस्कार बनाना निज-कृपा कहलाती है। जब निज-कृपा होगी तभी गुरु-कृपा व ईश्वर-कृपा होगी।

Scanned by CamScanner

जो अवस्था हम वर्षों की तपस्या से नहीं पा सकते वह क्षण मात्र में गुरु कृपा से मिल जाती है।

✡ ✡ ✡

गुरु उसको कहते हैं जिससे बहतर, खुशतर और प्यारी वस्तु दुनियाँ में और कोई न हो और जिसके लिये दुनियाँ की हर वस्तु छोड़ी जा सकती हो।

✡ ✡ ✡

गुरु बड़े सौभाग्य से मिलता है। अगर सौभाग्य से मिल जावे तो उसके सत्संग से पूरा फ़ायदा उठाना चाहिये। गुरु की ज़िन्दगी में ही आत्मा का साक्षात्कार कर लेना चाहिये। बग़ैर गुरु के आम तौर पर आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता।

✡ ✡ ✡

गुरु का तो एक बड़ा भारी सहारा होता है। अगर वास्तव में हमें उनसे सच्चा प्रेम है तो जहाँ कहीं फँसेंगे वहीं से वे निकाल लेंगे। अगर किसी इच्छा को आप नहीं दबा सकते हैं, तो गुरु का सहारा लेकर धर्मशास्त्र के अनुसार भोगो। लेकिन सही और ग़लत का ध्यान रहे, धर्म का सहारा न छूट जाय।

✡ ✡ ✡

जीवात्मा, आत्मा और अन्तःकरण की मिलौनी का नाम है। जीवात्मा का गुरु आत्मा है।

Scanned by CamScanner

सण्त की छः पुश्तें (पीढ़ियाँ) अपने आप तर जाती हैं। दुनियाँ में उसके जितने निकट सम्बन्धी हैं उनका ख्याल उसे आता है। ऊपर के वंश में वह माँ बाप और दादा तक सोचता है और नीचे के वंश में बेटे और पोते तक। खुद वह परमात्मा में लीन रहता है इसलिये जिसका भी ख्याल करता है उस पर असर ज़रूर पड़ता है। शिष्य अगर गुरु का ध्यान करे तो जिस स्थान पर गुरु की उस वक्त बैठक होती है वहाँ तक का फ़ायदा शिष्य को आप से आप हो जाता है।

✡ ✡ ✡

जिस व्यक्ति ने जीवात्मा के ऊपर के आवरण उतार डाले उसके शरीर को चलाने वाला आत्मा है और वही सन्त, औलिया, पैगम्बर, गुरु इत्यादि के नाम से जाने जाते हैं।

✡ ✡ ✡

सतगुरु का सहारा ज़रूर लेना पड़ेगा। बिना उसके सहारे के जीव की सामर्थ नहीं कि इस अभ्यास को अपनी हिम्मत के भरोसे पर कर सके। जब सुरत शब्द की धार पर सवारी करके चलता चला जायेगा, तो बूँद पहले सिन्धु में समा जायेगी (यानी गुरु में लय होगा जिसे सूफ़ियों में फ़ना-फ़िल शेख कहते हैं) और इससे आगे चलकर स्रोत में पहुँच जायेगी (यानी अनामी पुरुष में लय हो जायगा जिसे सूफियों में फ़नाफ़िल रसूल कहा गया है) इसके पश्चात् आदि पुरुष

Scanned by CamScanner

में लय हो जायेगा जिसे सूफ़ियों में फ़नाफ़िल अल्लाह कहते हैं। इसी का नाम सच्ची भक्ति और सच्चा उद्धार है।

✡ ✡ ✡

जब तक विभीषण साथ नहीं था लंका पर बिजय नहीं हो सकी। इसलिये सच्चे भेदी गुरु को साथ लो।.. उससे प्रेम करो और उसमें विश्वास रखो। रास्ता आसानी से तय हो जायेगा।

✡ ✡ ✡

गुरु की सन्तान की बेक़दरी न करो। उसमें गुरु का अंश मौजूद है।

✡ ✡ ✡

ईश्वर गुरु रूप में आकर आवागमन के चक्कर से छुड़ाता है। दुनियाँ से हमेशा-हमेशा के लिए निकालता है। जो लोग दुनियाँ चाहते हैं उनको सन्तों से असली फ़ायदा नहीं होता। सन्त तो दुनियाँ उजाड़ते हैं, उसके बन्धन ढीले करते हैं। असली फ़ायदा उन्हें होता है जो दुनियाँ से उद्धार चाहते हैं।

✡ ✡ ✡

बिना रहबर (पथ प्रदर्शक) को साथ लिये, बिना गुरु किये रास्ता तय नहीं होता। निर्गुण का ध्यान कैसे हो सकता है? इसलिये उस महापुरुष की शरण लो जिसने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया है। उसका स्थूल शरीर

Scanned by CamScanner

मन्दिर है जिसमें निर्गुण परमात्मा विराजता है। उससे प्रेम करने से, उसका ध्यान करने से तुम्हें भी आत्म-दर्शन होगा। इसलिये हमारे यहाँ के तरीक़े में गुरु धारण करते हैं। गुरु की पूजा को ही मुख्यता देते हैं। गुरु और ईश्वर को दो नहीं मानते।

✡ ✡ ✡

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आपको पहचाने कि मैं क्या हूं। ईश्वर को पहचाने और उसमें अपनी हस्ती लय कर दे। जो इस आदर्श का रास्ता दिखावे वही सच्चा गुरु है। जो इस आदर्श की प्राप्ति करना चाहता है वही सच्चा भक्त है। जब ऐसा शिष्य हो और ऐसा गुरु हो तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति मुमकिन है।

✡ ✡ ✡

ख़्याल से ही हम भ्राँति में फँसे हैं और ख़्याल से ही छूटेंगे। यह सारी दुनियाँ ख़्याल से ही बनी है और ख़्याल से ही छूटेगी भी। इसलिये सतगुरु का ख़्याल बाँधकर इन सभी सांसारिक वासनाओं तथा भोगों को काटते जाओ। यही सबसे नज़दीक रास्ता ईश्वर को पाने का है।

✡ ✡ ✡

यदि किसी सन्त के पास बैठने पर आपकी कमियाँ आपके समक्ष उभर आयें, अपनी कमज़ोरियों की जानकारी मिलने लगे और उन्हें दूर करने की भावना को उभार मिले,

Scanned by CamScanner

ईश्वर सम्बन्धी विभिन्न जिज्ञासाएँ जाग्रत होने लगें, मन में अनेक सत-सम्बन्धी भावनाओं को उत्साह मिलने लगे तो बस इससे आप यह अनुमान कर सकेंगे कि यहाँ पर आपको शान्ति मिल सकती है। अब कुछ दिन आप उनका सतर्कता के साथ सत्सङ्ग करिये। यदि आपका हिस्सा उन सन्त के पास हुआ तो वे भी आपकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होंगे और फिर सम्भवतः आपको भटकना नहीं पड़ेगा। यदि किसी सन्त से आपका नाता जुड़ गया है तो यह सत्य है कि संकटग्रस्त परिस्थितियों में गुरु से सहायता मिलती है। आगे प्रगति होने पर ऊपरी लोकों में भी गुरु के दिव्य दर्शन होते हैं और उसके विदेह होते हुए भी मार्ग निर्देशन मिलता रहता है।

✡ ✡ ✡

सन्त के चारों ओर का वातावरण आध्यात्मिकता से भरपूर रहता है। किसको कितना लाभ होता है यह जिज्ञासु एवं भक्त की ग्रहण शक्ति पर निर्भर है परन्तु यह निश्चयात्मक तथ्य है कि बग़ैर गुरु के ईश्वर का प्रेम नहीं मिल सकता। सत् तक तो कोई भी व्यक्ति अपने आपको ले जा सकता है।

✡ ✡ ✡

सत्गुरु वह है जो तीन चीज़ों से अलग हो—कामिनी, कान्चन और यश। ईश्वर का पूर्ण भक्त हो, सिवाय ईश्वर

Scanned by CamScanner

की बात के दूसरी बात न करे, उसे आपसे कोई गरज न हो, उसके पास बैठने से मन शान्त हो, उसकी कथनी और करनी एक जैसी हो और सिवाय दूसरों की भलाई के और कुछ न चाहता हो।

☼ ☼ ☼

जिस गुरु के ध्यान के साथ-साथ जीवन में एक बार भी आपको प्रकाश नजर आया है तो समझ लीजिये कि वह सचखण्ड तक पहुँचा हुआ है।

☼ ☼ ☼

गुरु का स्थूल शरीर गुरु नहीं है, ईश्वर उस स्थूल शरीर के द्वारा प्रकट हो रहा है। उसमें अपने आप को लय कर दो। जब सम्पूर्ण लय हो जाओगे तो अपने आपको पहचान जाओगे कि तुम कौन हो।

☼ ☼ ☼

एक ग़लतफ़हमी (भ्रम) आम तौर पर यह फैली हुई है कि पहले गुरु के चोला छोड़ने पर दूसरे गुरु का ध्यान करना चाहिए और पिछले गुरु से कोई वास्ता न रखना चाहिए। जब गुरु उस पवित्र हस्ती का नाम है जो जीते जी ही ईश्वर में लय हो चुका है तो शरीर छोड़ने पर यह कैसे समझ लिया जाये कि वह अब मौजूद नहीं है। चोला छोड़ने पर आत्मा आज़ादी हासिल करके ईश्वर रूप में हर जगह मौजूद रहती है। इसलिये उसको मरा हुआ

Scanned by CamScanner

समझना ग़लती है। उसके चोला छोड़ने पर उसी का ध्यान करना चाहिए। हाँ, अगर अभी तक तमोगुणी और रजोगुणी मन पर बैठक है या सतोगुणी मन पर बैठक तो है किन्तु वह स्थायी नहीं है तो अपने उस बड़े भाई के संरक्षण और आदेशों से सहायता लेते रहना चाहिए जिसको गुरु इस कार्य के लिये नियत कर गया हो, और यदि ऐसा कोई भाई न हो तो किसी दूसरे गुरु से सत्सङ्ग करके फ़ायदा उठा सकता है।

☼ ☼ ☼

[२]
प्रेम व दीनता

यह युग भक्ति और प्रेम का है जो बिना दीन बने नहीं आ सकतीं। यदि सच्ची चाह मालिक से मिलने की और उसके दर्शन प्राप्त करने की होगी तो सच्ची दीनता भी आवेगी और उससे परमार्थ की कार्यवाही सुगमता से बन पड़ेगी।

☼ ☼ ☼

जब निरन्तर प्रेम से गुरु और शिष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो एक के विचार दूसरे के ऊपर उतर

Scanned by CamScanner

जाते हैं। गुरु रूप में परमात्मा आकर हमारी सहायता करता है। मगर शर्त यह है कि प्रेम सच्चा हो, कोई ग़रज़ (स्वार्थ) न हो और अगर ग़रज़ भी हो तो प्रेम पाने की ख़्वाहिश हो। गुरु का प्रेम ही ईश्वर प्रेम में बदल जाता है।

☼ ☼ ☼

प्रेम की और गुरु से नाता जुड़ने की पहिचान यह है कि जो ख्याल गुरु के दिल में पैदा हो वह शिष्य पर उतर जाय। फिर उस ख़्याल को ख़त के ज़रिये या मिलने पर confirm (पुष्टि) कर लें। इसका मतलब यह है कि शिष्य का निजी रूप जागृत अवस्था में आ गया है और गुरु की तालीम (शिक्षा) क़बूल कर रहा है।

☼ ☼ ☼

तुम अपने से पूछो कि ईश्वर या गुरु को क्यों प्यार करते हो ? जबाब मिले कि हम नहीं जानते। पूछो कि क्या चाहते हो ? और जबाब मिले, "कुछ नहीं चाहते"। यही सच्चा प्रेम है।

☼ ☼ ☼

सच्चा प्यार वह है जिसकी वजह समझ में न आये लेकन बग़ैर उसके रह भी न सके। तू न सही तेरा ख्याल ही सही।

☼ ☼ ☼

उत्तम दीनता यह है कि संसार से दुःखी होकर उसे छोड़ना चाहे।

Scanned by CamScanner

मन का प्रेम बदला चाहता है और बदलता रहता है। हम ईश्वर से प्रेम इसलिए करते हैं कि हमारी दुनियाँ की ख़्वाहिशें पूरी हों, हमें दुनियाँ में धन, सम्पत्ति, ऐशो-आराम मिले। यह मन का प्रेम है। आत्मा का प्रेम बदला नहीं चाहता, जाँनिसारी (आत्म बलिदान, जीजान से न्यौछावर हो जाना) चाहता है। सब कुछ दे देना चाहता है लेकिन लेना कुछ नहीं चाहता। यह प्राकृतिक प्रेम है, जो अंश को अंशी से होता है। अर्थात् आत्मा परमात्मा की अंश है और इस नाते वह अपने अंशी से स्वाभाविक प्रेम करती है। मन के प्रेम की एक पहचान यह भी है कि वह जिसे प्रेम करता है उसे किसी दूसरे को प्रेम नहीं करता देख सकता।

जो आदमी बिना स्वार्थ के प्यार करता है, अपने बेटे-बेटी और दूसरे के बेटे-बेटी को बिना (Distinction) (भेद-भाव) के सबको एकसा प्यार करता है, कोई फ़र्क़ नहीं समझता और जिसका प्यार जीव जन्तुओं, वनस्पतियों इत्यादि सबके लिए समान है, उसी के दिल में परमेश्वर बसता है। यही प्यार ईश्वरीय कहलाता है, यही Universal love (विश्वव्यापी प्रेम) है।

जहाँ देखने की, चिपटाने की या छूने की चाह है, वह इन्द्रियों का प्यार है। हमारे मन की इच्छायें जिससे पूरी

Scanned by CamScanner

हों, वह मन का प्यार है। जहाँ न ख़्याल है, न ग़रज़ है न और कुछ, सबका भला ही भला चाहता है, वही सच्चा प्यार है। ऐसे प्रेम में प्रेमी ईश्वर को अपने से अलग नहीं मानता है। जहाँ ऐसा प्यार है वहाँ तक़दीर और तदबीर कुछ नहीं चलती। वह जो चाहे सो कर सकता है। यही रूहानियत है।

जब तक Lover और Beloved (प्रेमी और प्रीतम) का प्यार, प्रतिव्रता पत्नी और पति का प्यार या और कोई प्यार सब इकट्ठे नहीं हो जाते तब तक सच्चा वियोग नहीं होता और जब ऐसा वियोग हो जाता है तब पुकारने से ईश्वर मिलता है। सब चीज़ को छोड़कर एक ईश्वर से प्रेम करो, मन जहाँ-जहाँ फँसा हुआ है वहाँ से खेंच कर, उसकी बिखरी हुई शक्तियों को बटोर कर एक ईश्वर के चरणों में लगा दो। उसके ख़्याल में और उसके प्रेम में ऐसे महब (तल्लीन) हो जाओ कि सिवाय उसके और किसी का ध्यान न रहे। यह दुनियाँ तो जैसी है वैसी ही रहेगी और इसका कोई काम बन्द नहीं होगा। हमें इससे क्या, हमें तो अपने प्रीतम से काम है।

आत्मा पतिव्रता स्त्री की तरह है। या तो वह सोई रहती है और मन काम करता है, या वह ईश्वर से प्रेम

Scanned by CamScanner

करेगी, सिवाय उसके किसी और से प्रेम नहीं करेगी।

✡ ✡ ✡

अगर सच्चा प्रेम है तो ईश्वर ख़ुद ही खिंचा चला आता है।

✡ ✡ ✡

असली जिज्ञासु कौन है? जिसको ईश्वर से मिलने की सच्ची ख़्वाहिश है और तड़प है और ज़िन्दगी से बेज़ार है (ऊब गया है)। मौजूदा हालत चाहे उसकी कुछ भी हो, चाहे वह अच्छे आचरण का हो या न हो, अगर उसमें प्रेम है, तड़प है, तो वही उसे हर हालत से निकाल कर ले जायेगी। यह मार्ग प्रेम का है। अगर आप के दिल में गुरु का प्रेम है तो आप उससे प्रेम करेंगे और वह आप से प्रेम करेगा।

✡ ✡ ✡

जब मनुष्य के सब आपे दूर हों, सिवाय परमात्मा के और किसी का भरोसा न हो तब प्रेम की उच्च अवस्था प्राप्त होती है और वही पूर्ण दीनता की अवस्था है।

✡ ✡ ✡

परमात्मा के प्रेम के आते ही बुराइयाँ दूर होने लगती हैं और आख़ीर में सिवाय उसके प्रेम के और कुछ नहीं रहता। यही मोक्ष और मुक्ति है।

Scanned by CamScanner

प्रेम चाहे किसी दुनियाँदार से हो या ईश्वर से, उसमें कोई ग़रज़ नहीं होनी चाहिए। जहाँ ग़रज़ होती है उसे प्रेम नहीं कहते। वह सौदेबाज़ी है। गुरु से प्रेम करो और कुछ न चाहो। अपने मन से पूछो कि क्या चाहते हो और जवाब मिले कि कुछ नहीं चाहते, हमारा प्रीतम खुश रहे, बस यही चाहते हैं। हमारा रास्ता प्रेम का रास्ता है। प्रेम में जहाँ ग़रज़ शामिल होती है वहीं रास्ता बन्द हो जाता है।

ईश्वर प्राप्ति के दो ही रास्ते हैं—एक प्रेम और दूसरा दीनता। जिस साधन या अभ्यास से यह दोनों पैदा न हों वह रास्ता ग़लत है।

जो बीज ईश्वर प्रेम का एक बार पड़ गया वह जाता तो है नहीं मगर बढ़ता है सिर्फ़ इन्सानी चोले में।

ईश्वर के पास दीनता नहीं है (वह बेनियाज़ है)। जो कोई दीन बन कर उसके दरबार में जाता है, उसे वह मिलता है। सन्त सदा उसके दरबार में हुज़ूरी के साथ हाज़िर रहते हैं इसलिये वह सदा सन्तों में मूर्तिमान रहता है। संतों के चरणों में रहने से दीनता और दीनबन्धु दोनों मिलते हैं।

Scanned by CamScanner

परमात्मा की हज़ारों सिफ़ात (गुण) हैं जिनमें सच्चाई और प्रेम दो ख़ास हैं। जो व्यक्ति परमात्मा की नज़दीकी (सामीप्य) चाहता है उसको चाहिए कि दोनों चीज़ें अख़्तियार करे। बग़ैर इन दोनों के उस तक पहुँच नामुमकिन है (असम्भव है)।

मुहब्बत जब मंज़िले तकमील से गुज़र (पूर्णता को प्राप्त हो) जाती है तो इस्तग़राक (लय) की शक्ल अख़्तियारकर लेती है।

किसी ऐसे महापुरुष का सहारा लो जो रास्ता चल चुका हो। केवल इतना करो कि संसार भर की चीज़ों में जो तुम्हारा प्रेम बँटा हुआ है उसे समेट कर उसके चरणों में लगा दो। यही गुरु धारण करना है।

पहले पहल तो गुरु से प्रेम एक साथ नहीं होता, धीरे-धीरे बढ़ता है। जहाँ हम अपने माता-पिता, भाई, रिश्तेदारों वग़ैरा को प्यार करते हैं उतना ही शुरू में हम गुरु से करें। फिर जब धीरे-धीरे गुरु की महिमा को समझने लगते हैं, प्रीति और प्रतीत होने लगती है। तब आहिस्ता आहिस्ता अपना विश्वास ख़ुद ही बढ़ता जाता है। इसी को Consciousness (आत्म जागृति) कहते हैं।

Scanned by CamScanner

सबसे पहले स्थूल से स्थूल को यानी शिष्य को गुरु के बाहरी शरीर से प्रेम होता है और वह स्थूल सेवा पसन्द करता है, जैसे पाँव दबाना, नहलाना धुलाना, कपड़े साफ़ करना इत्यादि। इससे उसका मन शुद्ध होने लगता है और वह सूक्ष्म हालत पर आने लगता है, यानी गुरु से हम-ख़्याल होने लगता है। गुरु जो ख़्याल करते हैं शिष्य उसे क़बूल करने लगता है। यह मन का प्रेम है। यह प्रेम जब और बढ़ने लगता है तब गुरु और शिष्य 'एक जान दो क़ालिब' हो जाते हैं यानी शरीर तो दो अलग दिखाई देते हैं लेकिन अन्दर से वे दोनों एक होते हैं। यहाँ शिष्य की बुद्धि गुरु में लय हो जाती है। यह बुद्धि का प्रेम है। इसके बाद शिष्य को कारण यानी ईश्वर से प्रेम होने लगता है। वह उसी को अपना सब कुछ मानता है लेकिन दुई बाक़ी रहती है। इसके बाद जब प्रेम और बढ़ता है तो वह आत्मा का प्रेम कहलाता है। यही प्रेम की इन्तहा (पराकाष्ठा) है। वह सब चीज़ों में, चाहे वे जानदार हों या बेजान, अपनी ही आत्मा देखता है। सबको समान रूप से प्रेम करता है।

☼ ☼ ☼

दूसरों के कथित अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। अपनी त्रुटियाँ देखनी चाहिए और उनका सुधार करना चाहिये। इससे दीनता आती है।

☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

जितनी आत्मा मन के फन्दों से निकलती जाती है उतना ही अनामी पुरुष के लिए प्रेम जागने लगता है। जितना प्रेम बढ़ता जाता है उतनी ही आत्मा सत्पुरुष में लय होती जाती है। आत्मा सत्पुरुष में लय होकर ज़िन्दा (जीवित) रहती है। यही असली रूहानी ज़िंदगी है, यही निर्वाण-पद है।

[३]

साधन

अपने ख़्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख़्यालों पर क़ाबू पाने की कोशिश करो। बुद्धि को दुनियावी ख़्यालों से हटाकर सन्तों की बानी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ। मन की ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाओ और उसको गुरु के ध्यान में लगाओ। इन्द्रियों का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि इन्द्रियाँ दुनियावी ग़िलाज़त

Scanned by CamScanner

(गन्दगी) देखने की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी-सहनी का ठीक करना है।

✡ ✡ ✡

सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि इस बात को ज़हन नशीन (स्मरण) कर लो और पुख़्ता कर लो कि यह दुनिया ईश्वर की है, तुम्हारी नहीं है। तुम भी ईश्वर के हो और यह सब काम ईश्वर का है। वह जैसा चाहेगा वैसा होगा। अपना बोझ उस पर डाल दो। वह जिस हालत में रखे, खुश रहो। इन्सान की सब ख़्वाहिशात पूरी नहीं होती हैं। इसलिए वह दुखी होता है। अगर ख़ुश रहना चाहते हो तो जहाँ उसने रखा है और जिस हालत में रखा है उसमें खुशी से रहो। ईमानदारी से काम करो तथा भगवान् का नाम लेते जाओ।

✡ ✡ ✡

चलते फिरते यह ख़्याल रखना चाहिए कि मेरी जगह गुरु ने ली है, मैं वही हूँ। यही सहज-योग है। इसके अभ्यास के लिये न कोई निश्चित वक्त और न कोई निश्चित जगह है। हरेक मनुष्य हर समय और जगह यह अभ्यास कर सकता है।

✡ ✡ ✡

दुनिया अगर बुरी लगती है तो ईश्वर मिलना चाहिए। आनन्द, जिस की हमको तलाश है, वह मिलना चाहिए।

Scanned by CamScanner

अगर नहीं मिलता तो यह कैसा वैराग है ? यह तो लखूटा वैराग है, मन्द वैराग है ।

☼ ☼ ☼

रास्ता आसान नहीं है । इसमें दृढ़ विश्वास और अभ्यास की बड़ी जरूरत है । रुकावटें आती हैं और ऐसा लगता है कि तरक़्क़ी नहीं हो रही लेकिन निराश नहीं होना चाहिए । एक साहब ने किताब में पढ़ा कि राम नाम का जाप करने से ईश्वर के दर्शन होते हैं । मन्दिर गए, आँखें बन्द करके बैठे और जाप करने लगे । दस पन्द्रह मिनट बाद आँखें खोल दीं कि ईश्वर के दर्शन नहीं होते और सोच लिया कि रास्ता ग़लत है । यही हाल अभ्यासियों का है । अभ्यास करते नहीं हैं और चाहते हैं कि ईश्वर के दर्शन हो जाएँ, आत्मा के पर्दे अभी हटे नहीं हैं, मन की ख़्वाहिशें (इच्छाएँ) गई नहीं हैं और रास्ते को ग़लत समझ बैठे ।

☼ ☼ ☼

असली वैराग वह है कि सब चीज़ें मौजूद हैं लेकिन किसी में तबियत नहीं लगती, पागल कुत्तों की तरह इस लिये मारा-मारा फिरता है कि किसी तरह आत्मा का आनन्द मिल जाय ।

☼ ☼ ☼

दुनिया को भोगो ताकि पिछले संस्कार समाप्त हो जायें । इस तरह दीन और दुनिया दोनों बन जायेंगे । जो

Scanned by CamScanner

लोग परमात्मा और गुरु से सच्चा प्रेम करते हैं और दुनिया में रहते हुए अपने दुनियावी फ़र्ज़ पूरे करते हैं वे एक ही जन्म में भवसागर से पार हो जाते हैं।

☼ ☼ ☼

ग़लती न करने की अपेक्षा ग़लती करके उसे सुधारना अच्छा है। जिस प्रकार खेत में उपजे हुए खरपात को उखाड़ कर उसी में सड़ने गलने को छोड़ देने से उसकी उपज शक्ति बढ़ती है, उसी प्रकार ग़लती सुधारने से हृदय बलवान बनता है।

☼ ☼ ☼

जो लोग यह सोच कर बैठ जाते हैं कि ईश्वर कृपा करेगा तो सब ठीक हो जायेगा और वे भवसागर से पार हो जायेंगे, यह सोचना भूल और आलस्य है। ईश्वर उन की सहायता करता है जो स्वयँ पुरुषार्थ करते हैं और उस की ओर चलते हैं।

☼ ☼ ☼

मन ही असली बन्धन का कारण है। जो साधन इस बन्धन को ढीला करे वही असली साधन है, अन्यथा समय का नष्ट करना है।

☼ ☼ ☼

जो स्वयँ आज़ाद (मुक्त) है वही दूसरे को आज़ाद करा सकता है। जो खुद फँसा हुआ है न वह ख़ुद आज़ाद हो सकता है न दूसरे को आज़ाद करा सकता है। जो साधन

Scanned by CamScanner

इस (मन और आत्मा की) गाँठ को खोलने में मदद दे वही असली साधन है और वही असली धर्म या मजहब है। जो गुरु इस गाँठ को खोल दे वही असली गुरु है और सब धोखा है।

✡ ✡ ✡

तकलीफ़ें बहतरी (कल्याण) के लिए आती हैं। ईश्वर को जिसका उद्धार मंजूर होता है उस पर शुरू-शुरू में तकलीफ़ें आती हैं। इनसे आत्मा का मैल धुलता है। तकलीफ़ों से पुराने संस्कारों का कफ़्फ़ारा (बदल) हो जाता है। ✡✡ तकलीफ़ों का स्वागत करना चाहिए। ✡✡तकलीफ़ें हमारे प्रभु का निमंत्रण हैं। जिह्वा पर शिकायत का एक शब्द भी नहीं आना चाहिए। मजबूरी से भोगना भी कोई भोगना है? उसे ख़ुशी से भोगना चाहिये और अपने प्रियतम का तोहफ़ा (उपहार) समझना चाहिये। उसमें वही आनन्द लेना चाहिए जो आनन्द अपने दुनियावी (साँसारिक) माशूक़ (प्रियतम) के लिये, दुनियावी सुख के लिए लेते हैं। क्या हमारा प्रियतम प्रभु दुनियावी माशूक़ से भी गिरा हुआ है? उसके रास्ते में जो भी तकलीफ़ें आवें उन्हें ख़ुशी से भोगना चाहिए।

✡ ✡ ✡

हमारा मत विशाल-हृदयता सिखाता है। घर वालों से प्रेम करो, पड़ोसियों से प्रेम करो, मुल्क वालों से प्रेम करो,

Scanned by CamScanner

संसार के सब मनुष्यों से प्रेम करो और जीवमात्र, वनस्पति स्थावर-जङ्गम सब से प्रेम करो। सब में एक वही परमेश्वर समाया हुआ है जो प्रेम का भंडार है। वही हमारा सच्चा गुरु है। सबसे प्रेम करते हुए तुम भी एक दिन प्रेम रूप हो जाओगे और अपने प्रियतम परमात्मा में समा जाओगे।

☼　☼　☼

जब किसी पर ईश्वर कृपा होती है और वह उसे पाना चाहता है तो उसके बन्धन टूटने लगते हैं। सबसे पहले उस की प्यारी से प्यारी चीज़ छीनी जाती है। दुनियादार इसे देखकर रोते हैं, सन्त ख़ुश होते हैं—हे प्रभु ! कितना अच्छा है, इसे लेकर तूने मेरा बन्धन काट दिया। इस तरह हर क़दम पर इम्तहान होता है। बग़ैर इम्तहान के कोई उसे प्राप्त नहीं कर सकता। हर क़ुर्बानी करनी पड़ेगी। अगर उसे पाना चाहते हो तो दुनिया की चीज़ें तो क्या, गर्दन तक काट कर देनी पड़ेगी।

☼　☼　☼

साधारण मनुष्य के लिए, जो दुनिया में फँसा हुआ है, ईश्वर तक पहुँचने के लिए सबसे सरल उपाय यही है कि उसके नाम का उच्चारण बराबर किया जाय। उसके नाम का उच्चारण करने से वह ईश्वर से मिला देता है जो उसके दिल में रहता है। जितना ही वह उसके पवित्र नाम का उच्चारण करता जायेगा वह अपने अन्दर उस परमात्मा के

Scanned by CamScanner

निकट पहुँच जायगा। अपने अन्दर से बुराइयों के निकालने, आनन्द और ईश्वर को प्राप्त करने का इससे आसान तरीका कोई नहीं है।

✡ ✡ ✡

एक ही कर्म फँसाता है और वही निकालता है। अगर उस कर्म के करने में अपने आप को शामिल कर दोगे तो फँसायेगा और अगर उसे ईश्वर का समझ कर और ईश्वर की सेवा समझ कर करोगे तो वही कर्म बन्धन से छुड़ायेगा।

✡ ✡ ✡

गंगा का जल कितना पवित्र है, कभी सड़ता नहीं। मगर किसी तरह अगर वह दूर जा पड़े और बीच में एक मेंड़ सी बन जाय तो उसे गड्ढे का पानी कहते हैं, वह गंगा से अलग हो जाता है तो सड़ने लगता है। तुम भी गंगा के पानी हो, लेकिन गड्ढे में पड़े सड़ रहे हो, क्योंकि 'मैं' की मेंड़ बीच में बन गई है। तुम उसी सत्पुरुष दयाल का अंश हो जो सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापी है, लेकिन मन की वजह से, मेरे-तेरे पन की वजह से तुम्हारे और उसके बीच में एक मेंड़ बन गई है। उसको तोड़ दो, तुम और वह एक हो। यह बिना गुरु की शरण लिए, बिना उसके आदेशों का पालन किये और बिना सत्संग के नहीं होगा।

✡ ✡ ✡

Scanned by CamScanner

सन्यास लेकर जंगल में जा रहने से मन नहीं मरता क्योंकि वहाँ वे भोग के सामान नहीं हैं जिनसे मन लुभाया जा सके या जिनका प्रभाव मन पर सीधा पड़े। जहाँ भोग की वस्तुएं सामने आईं, सन्यासी का मन विचलित होने लगता है। इसलिए वास्तविक शान्ति गृहस्थ आश्रम में है।

जो अज्ञानी हैं वे बिना सोचे समझे करते हैं, उनमें पूर्ण अज्ञानता भरी पड़ी है। जो ज्ञानी हैं वे भी बिना सोचे समझे करते हैं, उनमें पूर्ण ज्ञान है। जो सोच समझ कर करते हैं उन्हीं में कमी है। ज्ञानी ईश्वर से मिलकर एक हो चुके हैं और मालिक (ईश्वर) अक़्लेकुल (all wisdom सम्पूर्ण ज्ञान) है, उसको सोच विचार की जरूरत नहीं पड़ती, उसके सब काम स्वतः स्वाभाविक रूप से होते रहते हैं। जो सोचते रहते हैं, यह करें कि वह करें—यह बीच वालों की हालत है। यही कशमकश (संघर्ष) है। इसी को देवासुर संग्राम भी कहा गया है। अच्छी और बुरी वासनाओं में युद्ध यही कहलाता है। मन को लालच है दुनिया का और आत्मा को लौ लगी है अपने प्रीतम के चरणों में लिपट कर एक हो जाने की। दोनों अपनी अपनी तरफ खिंचते हैं और यही कशमकश (struggle) होती रहती है। जो इसमें कामयाब (सफल) हो गया, यानी जिसने मन के चंगुल से

Scanned by CamScanner

अपनी आत्मा को न्यारा कर लिया, उसने समझो हीरा पा लिया ।

पहले ध्यान आता है, बाद में सुमिरन । सुमिरन दिल से होता है । ॐ राम, आदि सभी नाम उसी के हैं पर गुरु जो नाम देता है उसमें ही चित्त देना चाहिए । उससे लाभ होगा । जिस नाम में शक्ति नहीं है उससे लाभ नहीं हो सकता । साधक के लिये गुरु द्वारा बताये या दिये गये नाम में ही शक्ति है ।

समय थोड़ा है और हमें सीमित शक्ति (Fiexed Energy) मिली है जिसे हम दुनियावी कामों में खर्च कर देते हैं । वह शक्ति हमें मिलती तो है अपनी आत्मा के ऊपर से परदों को उतारने के लिए, आत्मा का साक्षात्कार करने के लिये, परन्तु वह ख़र्च होती है अन्य सांसारिक बातों में । गुरु से मदद माँगो, शक्ति माँगो, वे तुम्हारा मार्ग प्रदर्शन करेंगे और परमात्मा से (जो शक्ति का भंडार है) शक्ति लेकर तुम्हारी आत्मा को बलवान बनायेंगे जिससे तुम मन को अपने आधीन बना सकोगे । बिना गुरु की सहायता के, बिना उनसे अधिक शक्ति (Extra Energy) प्राप्त किये कोई बुरी आदत नहीं छूट सकती । लेकिन गुरु से शक्ति मिलती है केवल उनको जो उनकी इच्छानुकूल कार्य करते हैं जो उन

Scanned by CamScanner

के आदेशों पर चलते हैं।

✡ ✡ ✡

गुरु का बताया हुआ अभ्यास और गुरु का सतसंग करना चाहिए। इससे धीरे-धीरे (अभ्यासी) निचली वासनाओं को छोड़ता चलता है। तम से रज, रज से सत पर आ जाता है। गुरु के संग और सतसंग से आत्मा को शक्ति मिलती है जिससे अन्दर से दुनिया से छूटने के लिये बेचैनी होती है, यही सुरत का जगाना है। फिर वह मन के फंदे से निकलने के लिये प्रयत्न करती है, रोती बिलखती है और परमात्मा से मदद माँगती है। परमात्मा की अथाह कृपा की लहरें उमड़ती हैं और मनुष्य रूप में गुरु रूप होकर उसकी मदद करती हैं जिससे आत्मा मन के फंदे से स्वतंत्र हो जाती है और ईश्वर का प्रेम चमकने लगता है। दिल में एक दर्द बना रहता है जो उसको अपनी असल की ओर खींचता है, चाल को तेज़ कर देता है, रास्ता तय होने लगता है और आत्मा अपने प्रीतम यानी परमात्मा से मिलकर एक हो जाती है। यही निर्वाण पद है। यह हालत ज़िन्दगी में ही होती है क्योंकि ज़िन्दगी कुरुक्षेत्र है। मौत के बाद भोगयोनि है। जो कुछ करना है वह इसी ज़िन्दगी में करना है और अभी करना है।

✡ ✡ ✡

Scanned by CamScanner

तुम आत्मा हो, मन नहीं हो। आत्मा सर्वशक्तिमान है क्योंकि वह उस परमपिता परमेश्वर की अंश है जो समस्त शक्तियों का भंडार है। मन के कहने में मत चलो। जो मन के अनुसार काम करता है वह भँवर में फँसे हुए या दल-दल में फँसे हुए मनुष्य की तरह है। स्वयँ बाहर नहीं निकल सकता। कोशिश करो, मेहनत करो किन्तु सहारा परमात्मा का या गुरु का लो। बिना सहारा लिये काम नहीं बनेगा। कोशिश करो, यह पहली शर्त है। गुरु और मालिक को पुकारो और मदद माँगो, यह दूसरी शर्त है। जिस बच्चे को गोद में लिये रहोगे वह निकम्मा हो जायगा, परिश्रमी नहीं बनेगा और जीवन में कभी सफल नहीं बनेगा। बच्चा वही सफल होगा जो स्वयँ हाथ पाँव मारे। जो मनुष्य अभ्यास नहीं करेगा उसे सफलता नहीं मिल सकती।

तीन चीजें हैं :—

(१) ख़ूब कोशिश करो।

(२) ख़ूब प्रार्थना करो परमात्मा से, गुरु से, जिसका तुमने सहारा लिया है। ख़्याली तौर पर पैर पकड़ लो, रोओ गिड़गिड़ाओ और शक्ति माँगो।

(३)यह ख़्याल भी मत करो कि नाकामियाबी

Scanned by CamScanner

(असफलता) होगी। अगर कोई बुरी आदत छुड़ानी हो और कोशिश करने, प्रार्थना करने और मदद माँगने से भी न जाती हो तो उदास मत होओ, निराश न बनो। इसकी जिम्मेदारी (उत्तरदायित्व) तुम्हारे ऊपर नहीं है। सोच लो कि इसी में उसकी ख़ुशी है। कर्म करना तुम्हारा काम है, वह करो। फल की इच्छा रखना तुम्हारा काम नहीं है।

प्रेम से पहुँचता है। कसब (अभ्यास) से ठहरता है।

अच्छाई और बुराई एक ही तस्वीर के दो पहलू हैं। ++ काम तो नेक करो लेकिन अपने आप को उनका कर्त्ता मत समझो। स्वभाव ही ऐसा बन जाय कि काम ख़ुद-ब-ख़ुद नेक (शुभ) होने लगें। जहाँ बुराई का काम करने से बुरा संस्कार बनता है, वहाँ अच्छाई का काम करने से अच्छा संस्कार बनता है, दोनों ही में बन्धन है। बुरे को बुरा भोगना पड़ेगा और अच्छे को अच्छा। मोक्ष कहाँ हुई? इसलिये अच्छाई के ख्याल से भी अपने आप को हटा लो। स्वभाववश सब काम अच्छे हों, सब सोचना अच्छा हो और व्यवहार भी अच्छा हो। सत्कर्म, सद्विचार और सद्व्यवहार। जब ऐसे बन जाओगे तब चित्त की निरोधावस्था पैदा होगी।

Scanned by CamScanner

अभ्यासी ग़लती से समझने लगते हैं कि मोक्ष गति के पाने के लिये संसार का त्याग करना होगा, यह उनका भ्रम है। दुनिया भी रहेगी, कर्म भी रहेंगे, वही वातावरण भी रहेगा, सिर्फ़ भाव को बदलना है। हासिल (प्राप्त) ही हासिल करना है। थोड़े से सुख को छोड़कर हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी मिलती है। दुनिया की थोड़ी सी चीज़ें छोड़ने से दुनिया की सभी चीज़ें मिल जाती हैं। संसार को मन से छोड़ने से संसार का स्वामी बन जाता है। यही सच्चा परमार्थ है।

☼ ☼ ☼

परमात्मा बड़ा दयालु है। उसकी दया हरेक जीव पर हर वक़्त होती रहती है, लेकिन यह बड़ी नाज़ुक (कोमल) है। किसी मुख़ालिफ़त (विरोध) को बरदाश्त (सहन) नहीं कर सकती। अगर मन बीच में आ जाता है तो दया गुप्त हो जाती है। इसलिये दया के लिये हर वक़्त राज़ी-ब-रज़ा होना चाहिए।

☼ ☼ ☼

जो मनुष्य अपना सच्चा उद्धार चाहते हैं उन्हें चाहिये कि :—

(१) वक़्त के पूरे सतगुरु की खोज करें, उनकी शरण ग्रहण करें और उनके चरणों में दिन-दिन प्रीति बढ़ायें।

Scanned by CamScanner

(२) उनसे सुरत-शब्द-योग का अभ्यास और युक्ति मालूम करके पूर्ण विश्वास, प्रीति, और प्रतीत के साथ अभ्यास करें।

(३) सत्संग करें और सत्गुरु की शिक्षा पर चलें।

इस तरह करने से आहिस्ता-आहिस्ता एक दिन उनकी सुरत कुल्ल मालिक सतपुरुष दयाल के चरणों में पहुंच जायगी और सच्चा उद्धार हो जायगा।

☼ ☼ ☼

मन की चाल को देखता चले। सच्चाई का विचार, भलाई का विचार, ईश्वर प्राप्ति का विचार, यह सब परमार्थी चालें हैं! इनके अतिरिक्त जितने विचार मन उठाता है वे सब संसारी हैं और बन्धन में डालने वाले हैं। ईर्ष्या राग-द्वेष कम होते जाते हैं। सब से प्यार तथा मित्रता का भाव उत्पन्न होता है। धन-सम्पत्ति, मान-बड़ाई, इन्द्रिय-भोग आदि की ओर से ध्यान हटता जाता है। पहले जिन संसारी वस्तुओं में बड़ा आनन्द आता था उनमें वह आनन्द अब नहीं आता। सुरत (attention) जो सब तरफ बँटी हुई थी, सिमट-सिमट कर परमात्मा की ओर लगने लगती है। परमात्मा की इच्छा पर निर्भर रहता है यानी राज़ी-ब-रज़ा हो जाता है।

☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

मनुष्य में उतनी ही शक्तियाँ हैं जितनी परमात्मा में हैं। अन्तर यह है कि वे शक्तियाँ जीव में दबी हुई दशा में हैं, उनको उभारना चाहिए। संसार से निराश होकर जब हम सच्चे हृदय से परमात्मा को पुकारते हैं तो ऊपर से यानी मालिक की तरफ़ से शक्ति का संचार होने लगता है, धीरे-धीरे दबी हुई शक्तियाँ प्रकट होने लगती हैं। उस मनुष्य में इन्सान से देवताओं के गुण और फिर परमात्मा के गुण आ जाते हैं। अन्तर केवल मात्रा का रह जाता है, गुणों का नहीं।

☼ ☼ ☼

मन को जिस बात की आदत पड़ गई है उस की वह याद दिलाता रहता है। किसी काम को छोड़ देने के बाद भी मन उसका ख़्याल दिलाता रहता है, ठीक उसी तरह जैसे मिट्टी का बर्तन बन जाने के बाद भी कुम्हार का चाक चलता ही रहता है। चोर चोरी छोड़ दे लेकिन हेरा फेरी से नहीं जाता। कंडील का दीपक बुझ जाने के बाद भी उस में शक्लें कुछ देर चक्कर लगाती रहती हैं। वैसे ही किसी आदत को छोड़ देने के बाद भी मन में उन आदतों की याद चक्कर लगाती रहती है। लेकिन एक दिन आयेगा जब यह उसे भी छोड़ देगा। जब आत्मा को उस काम में रुचि ही नहीं रही तो मन कब तक चक्कर काटेगा ? जब चिराग़ ही

Scanned by CamScanner

बुझ गया तो कंडील की शक्लें कब तक चलती रहेंगी ?जब शक्ति निकल गई तो कब तक चक्कर चलेगा ?

☼ ☼ ☼

परमात्मा को प्राप्त करने के लिए जब तक अपनी जान तक न्यौछावर नहीं कर देगा तब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होगी। जान का न्यौछावर करना क्या है ? जीते जी मर जाना। परमात्मा के प्रेम के अतिरिक्त अपने मन में कोई दूसरी इच्छा शेष न रखे। जब इन बातों पर अमल करेगा तो सफलता मिलती जायेगी। मीरा कहती है :—
"सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय।'
बिना सूली पर चढ़े पिया की सेज नहीं मिलती।

☼ ☼ ☼

तीन बातें करते रहो (१) अभ्यास (२) परमात्मा से लौ लगाये रहो और (३) समय कितना भी लगे, इसका ख़्याल मत करो। धीरे-धीरे मन को समझा बुझा कर आहिस्ता-आहिस्ता नियंत्रण में लाओ। अगर नहीं मानता तो लड़ो मत वर्ना समय व्यर्थ जायगा। सन्तों का तरीक़ा राज़ी-ब-रज़ा का है। हठयोग का नहीं, राजयोग का है।

☼ ☼ ☼

कोई चीज़ मुफ़्त नहीं मिलती, क़ीमत देनी पड़ती है जो चीज़ जितनी मँहगी है उतनी ही ज्यादा उसकी क़ीमत देनी पड़ती है। अगर ईश्वर को चाहते हो, हमेशा-हमेशा

Scanned by CamScanner

का आनन्द और सुख चाहते हो तो जान की बाज़ी लगानी पड़ेगी। क़ीमत क्या है ? अपने अरमानों (आकाँक्षाओं) का ख़ून कर दो, इच्छा रहित हो जाओ और अपने आपको पूरी तरह समर्पण कर दो। इसका भेद सन्तों की सोहबत (सत्संग) में मिलेगा।

☼ ☼ ☼

तदबीर (उपाय, पुरुषार्थ) के ज़रिये (द्वारा) इन्सान अपनी तक़दीर को बदल सकता है। जिन बातों को वह अपनी पिछली ज़िन्दगी में पूरी तरह हासिल न कर सका, वे इस ज़िन्दगी में ज़रा सी कोशिश करने से हासिल हो सकती हैं। जतन और जुस्तजू (पुरुषार्थ) चाहिये।

☼ ☼ ☼

'अहं' को दीनता में बदल दो। इससे मन का मान घटता जाता है और ईश्वर प्रेम बढ़ता जाता है। अपने आपको दुनिया का सेवक समझो, सब में ईश्वर का रूप देखो, इससे दीनता आती है।

☼ ☼ ☼

सन्तमत में प्रेम मार्ग को लेते हैं और किसी ऐसे महा-पुरुष को, जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया हो, गुरु धारण करते हैं। इन स्थूल आँखों ने जिसे कभी देखा नहीं बुद्धि जिसे समझती नहीं, जन्म-जन्मान्तर से जिसे स्थूल का ही ख़्याल करने की आदत है, वह निर्गुण का ध्यान कैसे

Scanned by CamScanner

करे ? जब तक हम ईश्वर गति पर न पहुँचें उससे प्रीत कैसे करें ? इसलिये पहले ऐसे महापुरुष से प्रेम करते हैं जो ईश्वर के दर्शन प्राप्त कर चुका हो और शरीरधारी हो। 'गुरु' शब्द का अर्थ है जो अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाये। शरीर से वह सांसारिक व्यवहार करता है और आत्मा से वह ईश्वर में लय है। जिस्म से हम उससे बोल और बातचीत कर सकते हैं। इस तरह से उससे सतसंग करते हुए और उससे प्रेम करते हुये हम अन्धकार से रोशनी की तरफ़ चलते हैं।

☼ ☼ ☼

सन्तमत प्रेम का मार्ग है। अगर शिष्य को गुरु की सौहबत बराबर मिलती रहती है और उनकी सेवा में बराबर आता रहता है, तो जल्दी तरक्क़ी होती है। सबसे आसान यही रास्ता है, मगर शर्त यह है कि बराबर गुरु से सम्पर्क बनाये रहे।

☼ ☼ ☼

मज़हब का ख़्याल छोड़ दो। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वग़ैरा के चक्कर में मत पड़ो। यह सब रास्ते की बाधायें हैं। हमारा प्रीतम तो ईश्वर है। उस तक पहुँचने के लिये हमें रास्ते में कुछ भी करना पड़े, वह भी मंज़ूर है।

☼ ☼ ☼

सबकी सेवा ईश्वर का रूप जानकर करो। यह

Scanned by CamScanner

दुनिया उसका विराट रूप है। बिना किसी Distinction (भेदभाव) के सबकी सेवा अपना फ़र्ज समझ कर करो। अगर कोई बुराई करता है तो सोचो कि यह बुराई करता है तो भी मेरे लिये अच्छाई है। क्या ईश्वर की मर्जी के बिना पत्ता भी हिलता है ? कितनी मेहरबानी है उस ईश्वर की कि उसकी बुराई से तुम्हारा संस्कार कट गया और बुराई दूसरे को मिल गई। निगाह (दृष्टिकोण) बदल दो। जो चीजें तुम्हें बन्धन में डाल रही हैं उन्हें छोड़ दो। एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम सब कुछ छोड़कर उसके बन जाओगे और वह तुम्हें अपनायेगा। उस वक्त तुम Dearest son of God (ईश्वर के सबसे प्यारे बेटे) हो जाओगे। King of Kings (बादशाहों के बादशाह) बन जाओगे। तमाम दुनिया की शक्तियाँ तुम्हारे आगे हाथ बाँधे खड़ी रहेंगी। मरते वक्त आज़ादी से जाओगे। महापुरुषों की पवित्र रूहें तुम्हें लेने आवेंगी। हँसते हुये जाओगे।

असली आनन्द आत्मा में है। जिस बाहरी चीज़ पर उसका अक्स पड़ता है मन और इन्द्रियाँ उसी में आनन्द लेने लगती हैं। लेकिन आत्मा पर जन्म जन्मान्तर से भले बुरे संस्कारों के ग़िलाफ़ चढ़े हुये हैं, वह दबी हुई है। उसे उभारो। इसके लिए आत्मा को ग़िज़ा की ज़रूरत है। आत्मा पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आनन्द और पूर्ण सत्य है। धार्मिक पुस्तकों के

Scanned by CamScanner

पढ़ने से, सन्तों के सत्संग से और उनके उपदेशों पर चलने से आत्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। सच बोलने अच्छे काम करने, अच्छे विचार रखने से आत्मा को ग़िज़ा मिलती है। दान करना, दया करना, किसी का दिल न दुखाना, इन सब बातों से आत्मा को बल मिलता है। आत्मज्ञान की प्राप्ति ही ईश्वर की प्राप्ति है। यही इन्सान की ज़िन्दगी का लक्ष्य है। इसलिये जब तक उसकी प्राप्ति न हो, बराबर आगे बढ़ते रहो। ईश्वर तुम्हारे अन्दर है। उसे प्रेम से बुलाओ। वह ज़रूर आयेगा।

हर पुरुष में १८ चक्र होते हैं परन्तु ईश्वर की ऐसी मौज है कि स्त्री में १२ चक्र होते हैं। इसलिये स्त्री में प्रेम तो होता है परन्तु ज्ञान की कमी के कारण वह ईश्वर स्वरूप कम ही बनती है, भक्ति में वह पुरुषों से आगे रहती है स्त्री के पश्चात् उसको पुरुष रूप मिलता है। पुरुष रूप में वह प्रयत्न करके जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होती है।

परमार्थी में स्त्री और पुरुष दोनों के गुण होने चाहिए तभी उसमें पूर्णता आयेगी, भक्ति भी और ज्ञान भी। जहाँ दोनों का संतुलन होगा, वहीं पूर्णता होगी। संतुलन का भाव है कि अपनी इन्द्रियों वृत्तियों और दूसरी शक्तियों पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। ईश्वर में सदैव लय अवस्था में

Scanned by CamScanner

रहना चाहिए और यह अवस्था निरन्तर एक-रस होनी चाहिए। जो मनुष्य इस अवस्था को प्राप्त करता है उसी का नाम पुरुष है।

✡ ✡ ✡

परमार्थ का भाव है कि मन को जितना भी हो सके उतना माँझना चाहिये। तामसिक तथा राजसिक वृत्ति का त्याग करके सत्वृत्ति को अपनाना चाहिये। सत्वृत्ति के साथ अन्तर में कोमलता तथा सरलता आनी चाहिये। सत्य बोला जाये परन्तु उसके साथ कड़वी बानी न हो, उसमें मिठास होनी चाहिये तथा अपनी बानी से किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिये। मनुष्य में दूसरे का दुःख देखकर अपने अन्तर में दुःख उत्पन्न हो और यह भावना आये कि किसी तरह उस दुःखी मनुष्य को उसके दुःख से निवृत्ति पहुँचाई जाये। किसी को ख़ुश देखकर मन में ईर्ष्या न आये परन्तु मनुष्य स्वयँ हर्षित हो। सबकी भलाई में मनुष्य अपनी भलाई समझे। साथ ही साथ उसकी बुद्धि निरन्तर ईश्वर का चिन्तन करती रहे। जब ऐसी अवस्था परिपक्व हो जाती है तब परमार्थी वेग से ईश्वर की ओर बढ़ता है और कुछ ही समय में वह आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है। जितनी अन्तर में पवित्रता, शान्ति तथा विचार-रहित अवस्था आती जायेगी उतना ही मनुष्य आत्मा के समीप आता जायगा।

✡ ✡ ✡

Scanned by CamScanner

अपने अन्तर में अपनी बुराइयों तथा त्रुटियों का अनुभव करना "ज्ञान" कहलाता है। उनको दूर करना 'तप' कहलाता है।

✡ ✡ ✡

हर परमार्थी को स्वाध्याय करना चाहिए। अपने अन्तर में कोई कमजोरी देखे तो उसको दृढ़ता से त्यागने का प्रयत्न करना चाहिए, जैसे अधिक बोलना, अधिक खाना, दूसरों की बातों में हस्तक्षेप करना, आदि। ये ऐसी बातें हैं कि यदि मनुष्य चाहे तो कुछ समय के प्रयास से इनसे मुक्त हो सकता है। इसके पश्चात जो और कठिन त्रुटियाँ हैं जैसे काम, क्रोध, अहंकार आदि इनको धीरे-धीरे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। यदि आरम्भ में ही कठिन त्रुटियों से मुक्त होने का प्रयास किया जायगा तो परमार्थी को निराशा होगी, क्योंकि काम, क्रोध, अहंकार आदि ऐसी बातें हैं, जिनसे मुक्त होने के लिए काफ़ी समय तक दृढ़ प्रयास की आवश्यकता है। इसलिए आरम्भ में उस त्रुटि से मुक्त होने के लिए प्रयास करना चाहिए जो सरलता से छूट जाय। ऐसा करने से मनुष्य को उत्साह मिलेगा, दृढ़ता आयेगी तथा उसमें कठिन बुराइयों से मुक्त होने के लिये साहस बढ़ेगा।

✡ ✡ ✡

जिस हालत में भी उसने रखा है, चाहे वह बुरी है या अच्छी, उसमें ख़ुश रहो। दुःख और सुख की दुनिया से ऊँचे

Scanned by CamScanner

उठो । जब तक जिन्दगी है दुःख और सुख तो आते ही रहेंगे उनका आना ही जरूरी है लेकिन अपने मन को इससे ऊँचा उठाओ और जो ख़िदमत या फ़र्ज़ ईश्वर ने सुपुर्द किया है उसे ईमानदारी और सच्चे दिल से पूरा करो । हर वक्त ख़्याल रखो कि यह दुनिया ईश्वर की है । हम सब ईश्वर के हैं । जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं ईश्वर के लिये कर रहे हैं । हम वहीं से आये हैं, उसी की दुनिया में रह रहे हैं और वहीं जाना है ।

☼ ☼ ☼

जब दो तारों में गाँठ लग जाती है तो वे अलग नहीं हो सकते । उन्हें अलग करने के लिए गाँठ खोलनी पड़ेगी । इसी तरह मन और आत्मा में गाँठ पड़ गई है । जब यह गाँठ छूट जाये तो परमात्मा के दर्शन हों । अज्ञानता ही यह गाँठ है ।

☼ ☼ ☼

आवागमन से छूटना चाहते हो तो सब ख़्वाहिशों को छोड़ो । अच्छी ख़्वाहिश करोगे, अच्छा मिलेगा, बुरी करोगे बुरा मिलेगा । यहाँ तो हर चीज का बदला है । जो दुःख सुख या बीमारी आती है, पिछले कर्मों का नतीजा है । ये भोगने तो पड़ेंगे ही । उन्हें अगर ख़ुशी से भोग लिया जाय तो आगे के संस्कार नहीं बनेंगे । इसलिये सूफ़ियों में राज़ी-ब-राज़ा की शिक्षा दी जाती है । जिस हाल में मालिक ने

Scanned by CamScanner

रखा है उसमें खुश रहो।

✡ ✡ ✡

मान लीजिये कोई बात आपके आचार्य के आपसे कही या किसी के ज़रिये अपने ख़्याल को ज़ाहिर किया तो अच्छाई इसी में है कि उसे मान लेना चाहिए। अपनी अक़्ल से उसे परखना नहीं चाहिए।

✡ ✡ ✡

मन के बन्धनों को ढीले करते चलो। प्रत्येक वस्तु को परमात्मा की समझो। मोह छूटता जायगा। जिस हाल में वह रखे उसमें खुश रहो। गुरु के कहने पर चलो और परमात्मा की याद से ग़ाफ़िल न हो, ईश्वर तुम्हें अपना प्रेम देगा।

✡ ✡ ✡

किसी चीज़ को अच्छा समझकर ग्रहण करना 'अनुराग' और किसी चीज़ को बुरा समझ कर उसे छोड़ना 'वैराग्य' है। जो वस्तु ईश्वर की तरफ़ को ले जाती है, उसे पकड़ो, वही अनुराग है। और जो वस्तु ईश्वर से छुड़ाती है, उसे छोड़ते चलो, यही वैराग्य है।

✡ ✡ ✡

यह मन ही है जो हमारी आस्तीन का साँप बना बैठा है। दोस्त बन कर वही हमको खा रहा है। यह कहता रहता है कि दुनिया में अपना धर्म पूरा करो। ऊँचा ले

Scanned by CamScanner

जाकर करता है। लेकिन याद रखो कि मुख्य धर्म है अपनी आत्मा का साक्षात्कार करना। बाक़ी सब धर्म Secondary (गौण) हैं। जीवन का लक्ष्य यही है।

जो ऊँचे अभ्यासी हैं, उन्हें मन दूसरी तरह मारता है। अगर भाइयों की सेवा का काम सुपुर्द कर दिया गया तो समझने लगे "मैं गुरु हूँ", पैर पुज रहे हैं, मन आनन्द ले रहा है। यह क्या किया तुमने ? अहंकार में फँस गये ! अधम योनियों में गये। जिसने अपने को गुरु समझा वह तो गया। गुरु तो केवल एक है—परमेश्वर ! वही असली गुरु है।

अगर मन किसी डर से जिद्द (हठ) छोड़ देता है (चाहे वह लालच के कारण, चाहे किसी वस्तु के न मिलने से) तो वह छोड़ना नहीं है। असल छोड़ना वह है कि वह चीज़ मौजूद है और ताक़त इस्तेमाल भी है और कोई डर भी नहीं है लेकिन अब उस चीज़ को तबियत नहीं चाहती।

तकलीफ़ें बहतरी (कल्याण) के लिये आती हैं। ईश्वर को जिसका उद्धार मंजूर होता है उस पर शुरू-शुरू में तकलीफ़ें आती हैं। इनसे आत्मा का मैल धुलता है ! तकलीफ़ों से पुराने संस्कारों का कफ़्फ़ारा यानी बदल हो जाता है।

Scanned by CamScanner

मोक्ष कभी पिछले संस्कारों से नहीं मिलती। वह तप करने से ही प्राप्त होती है। लिहाजा उसके लिये तप की बड़ी ज़रूरत होती है। अपने मन की चाल पर ख़्याल रखना उसको बराबर सँवारते रहना 'तप' है। तम से रज, रज से सत्, सत् से आत्मा में मिला देना (यानी ईश्वर की याद में मिला देना) यही असली तप है। मोक्ष को हासिल (प्राप्त) करने के लिए कोई मियाद (अवधि) नहीं है।

✡ ✡ ✡

परमात्मा के प्रेम को बढ़ाना चाहिए। इसकी दो तरकीबें हैं— एक तो इस तरह की किताबें पढ़ना जो इस से ताल्लुक़ रखती हैं और उन पर अमल करते चलना। दूसरी तम और रज से निकल कर सत् पर आ जाना (Character Formation) यानी अपने इख़लाक़ को सुधारना, और सन्तों की सौहबत करना।

✡ ✡ ✡

जब मनुष्य दुनिया की चीज़ों को आहिस्ता-आहिस्ता भोग कर यह जान लेता है कि इनमें असली सुख नहीं है, यह दुनिया रहने की जगह नहीं है, तब वह तम से हट कर सत् की तरफ़ मुड़ता है। तुम भी सत् पर आ जाओ। उस मालिक पर विश्वास करो, उस की शक्ति के साथ एवं इस प्रकृति माता के साथ सहयोग करो। घर के लोगों को— जिनके खिलाने, पिलाने, पढ़ाने और दुनियावी फ़रायज़ पूरा

Scanned by CamScanner

करने का काम तुम्हें सौंपा गया है, उसे उसकी सेवा समझ कर करो। हुकूमत तो सिर्फ़ मालिक की होती है और मालिक सिर्फ़ एक ही है—वह है परमात्मा। तुम्हें तो यहाँ सेवा के लिये भेजा है, तुम अपने को मालिक कैसे समझते हो? अपने घर वालों की ख़्वाहिशात की मातहती में मत पड़ो, मगर उन्हें गुनाह करने से रोको। कोई तुम्हारे काम नहीं आयेगा, कोई तुम्हारे मतलब का नहीं हो सकता।

जो हर बाधा में टक्कर लेता हुआ चला जाय, जो इन सब को ठोकर मार कर आगे बढ़ता जाय वही सच्चा परमार्थी है। उसे किसी की परवाह नहीं, वह अपनी आज़ादी चाहता है।

मन से दुनिया को छोड़ो। सब काम इसी तरह से होते रहेंगे जैसे होते हैं, लेकिन सिर्फ़ भाव बदलना पड़ेगा। हर काम को परमात्मा का काम समझ कर उसकी सेवा करो और इस भाव को स्थायी बना लो। लगातार यही ख़्याल रहे कि जो काम तुम कर रहे हो वह ईश्वर की सेवा है। यह दुनिया ईश्वर की है, सभी ईश्वर के हैं, जो काम कर रहे हैं वह ईश्वर की ही सेवा कर रहे हैं।

प्यार तो आप भी करते हैं—स्त्री को स्त्री की

Scanned by CamScanner

तरह, पुत्र को पुत्र की तरह और दूसरों को अपनी-अपनी हैसियत की मुताबिक। लेकिन इसका भाव बदलो। भाव बदलने पर प्यार तो वही रहेगा, लेकिन फ़र्क़ इतना हो जायगा कि तुम सबको ईश्वर का समझ कर प्यार करोगे। अभी अपना समझ कर प्यार करते हो, इसमें बन्धन होता है—उसमें मोक्ष होती है।

जब दुनिया और दीन की सब चाहों में आग लगायी जायगी केवल एक चाह मालिक से मिलने की ही शेष रहेगी और मनुष्य के सब व्यवहार, आंतरिक और बाहरी उसी के अन्तर्गत होंगे, सब पापों का नाश हो जायगा, तब मालिक के दर्शन होंगे।

Blind Faith (अन्ध विश्वास) शुरू शुरू में करना ही पड़ता है। किसने अपने बाप को देखा है कि यह मेरा बाप है? सिर्फ माँ के कहने पर मान लेता कि यह मेरा बाप है। बच्चे से माँ कहती है—"कौआ" और वह मान लेता है कि "कौआ" है। गुरु ने कहा कि ईश्वर है और शिष्य ने मान लिया, तब फ़ायदा होगा। Algebra (बीजगणित) में X मान लेते हैं फिर सवाल निकलता है और जो जवाब निकलता है उसका मिलान करके देखते हैं तब सही बैठता है। अगर X न माने तो सवाल नहीं निकलेगा।

Scanned by CamScanner

दुनिया के मामलों में भी विश्वास करना ही पड़ता है। विश्वास पर ही सारा लेन-देन और लौकिक व्यवहार चलता है। अगर अंग्रेजी पढ़ने जाओ तो अध्यापक कहेगा—"कहो ABCD।" अगर आप कहें कि मैं ABCD क्यों कहूँ, कुछ और क्यों न कहूँ, तो मामला बिगड़ जायेगा। फिर तो अंग्रेजी पढ़ ली। पढ़े लिखों में Blind Faith (अन्धविश्वास) नहीं आता। इसलिये सबसे ज्यादा दिक़्क़त पढ़े लिखों को Mould (सुधार) करने में आती है। एक तो वे यह समझते हैं कि दुनिया में धोखा बहुत है और फिर हर चीज़ को वे अपनी अक़्ल पर तोलते हैं। जब तक अभ्यास करके मन शान्त न हो जाय और आत्मा का ज्ञान न खुलने लगे तब तक तुम यह नहीं समझोगे कि जो कुछ गुरु कहता है वह सही है। जब तक बुद्धि शुद्ध न हो जाय तब तक गुरु की बात पर Blind Faith (अन्ध विश्वास) करना ही पड़ेगा।

सारा अभ्यास मन का है। मन की ही चौकीदारी करो। उसे तम से उठाकर रज पर और रज से सत पर ले जाओ। बुरे ख़्याल से उसे हटा कर अच्छे ख़्यालों में लगाओ। अगर बुरे ख़्याल आते हैं तो नाम का उच्चारण करने लगो। ख़्यालात पुराने संस्कारों का नतीजा हैं, जिन्हें

Scanned by CamScanner

रोकना अपने बस की बात नहीं है, उन्हें पलट दो। मन के ख़्यालों को पलट कर दुनिया की बजाय ईश्वर की तरफ़ लगा दो। साथ-साथ यह भी समझ लो कि जो भी हो रहा है, उसकी कृपा है। दोनों तरीक़ों को अपनाओ। बिना दुनिया को छोड़े ईश्वर से प्यार नहीं होगा। बिना प्यार के दुनिया की चीज़ें नहीं छूटेंगी। यही आपके यहाँ का तरीक़ा है, यही सत्संग है।

असली आनन्द वह है जिसे प्राप्त करने के बाद किसी दूसरे आनन्द की ख़्वाहिश न हो।

परमार्थ के लिए प्रयत्न करना होगा। ईश्वर के सामने दीन बनना पड़ेगा। दीन बनना यह है कि ईश्वर (गुरु) के हुक्मों पर यानी धर्म और सत् पर चलना। दीनता आने पर ईश्वर-प्रेम जागेगा, ईश्वर-कृपा होगी और ईश्वर-कृपा होने पर परमार्थ बनेगा।

भाव को बदल कर स्वभाव बना लो। इन्द्रियों में उतना फँसो जितना मजबूरी की वजह से हो, उनका आनन्द प्राप्त करने के लिए उसमें व्यौहार मत करो। औलाद पैदा करो, Nation (राष्ट्र) के लिए न कि इन्द्रिय-भोग के आनन्द की ख़ातिर। सब चीज़ें Duty Sake (कर्तव्य मात्र)

Scanned by CamScanner

भोगनी चाहिए, यही धर्म है। जो मनुष्य इन्द्रिय-भोग में फँसा है, वह मन से (जो उससे कहीं अधिक बलवान है)। कैसे अपने आपको हटायेगा ? आत्मा मन की क़ैद से न्यारी होकर ऊपर कैसे चढ़ेगी ? तम और रज से निकल कर सत् पर आओ, तुम्हारे अन्दर नेकी ही नेकी हो जाय, सच्चाई ही सच्चाई हो जाय, बुराई लेशमात्र भी न रहे, तब परमार्थ का रास्ता खुलता है।

☼ ☼ ☼

मन तो उधर ही जायगा जिधर वह सारे दिन लगा रहता है। मन को उधर से हटाओ। विवेक बुद्धि से काम लो। सोचो, कि दुनिया की वे सब वस्तुएँ, जिनमें तुम आनन्द लेते हो, नश्वर हैं। कुछ तो नाश हो चुकी हैं, कुछ नाश हो रही हैं, और कुछ नाश होने वाली हैं। उनसे अपना मन हटाओ। सख़्ती से काम लो और बुराई से हटकर सत् वृत्ति पर आओ। मन में ख़्वाहिशें उठती हैं, बुद्धि उसका साथ देती है और इन्द्रियाँ उस काम को पूरा करती हैं। जब सब तरफ़ से मन को खींच कर ईश्वर की तरफ़ लगाओगे तब तबियत लगेगी।

☼ ☼ ☼

धर्म-शास्त्र के अनुसार रहनी-सहनी बनाना और ऐसे काम करना जो ईश्वर-प्राप्ति में सहायाक हों, और एक ईश्वर को ही प्यार करना 'अनुराग' है।

Scanned by CamScanner

सन्त निर्विकल्प समाधि का अनुभव करने के बाद भी अपने सगुण ईश्वर (यानी गुरु के ध्यान) के स्थान पर उतर आते हैं यानी परमात्मा का अनुभव करने बाद भी उस स्थान से नीचे उतर कर ईश्वर का दर्शन अपने गुरु-रूप में करते हैं और गुरु को ईश्वर का रूप मानते हैं। गुरु मूर्ति ही उनके लिये परमात्मा का सगुण रूप है। इसी जगह गुरु की अहमियत (महानता) का पता लगता है और असली श्रद्धा आती है। ऐसे लोग कभी ईश्वर के निराकार रूप का अनुभव करते हैं और दुनियावी काम के लिये, जो बग़ैर मन की सहायता के नहीं हो सकता, ईश्वर के साकार रूप यानी गुरु के प्रेम का आनन्द लेते हैं।

☼ ☼ ☼

गुरु ने जो इरशादात (वचनामृत) किये हैं वे ही महावत हैं, हम सब अनुगामी (Follower) हैं। अगर शिष्य ने उन्हीं को अपनी ज़िन्दगी का रहबर (पथप्रदर्शक) बना लिया है तो एक न एक दिन वह उनमें पूरी तरह लय हो जाता है। इसी को (सूफ़ियों में) 'निस्बत' कहते हैं। जो शक्ति और गुण गुरु में होते हैं ठीक वैसे ही शिष्य में उतर आते हैं। वहाँ अपनी बुद्धि और चतुराई से काम नहीं चलता। गुरु-वचन को ही ब्रह्म-वाक्य माने और जिस तरह वे चलायें उसी तरह चले। यदि अपनी बुद्धि और चतुराई को सामने लायेगा तो फ़नाइयत (लय होने) में कमी होगी। जहाँ शिष्य

Scanned by CamScanner

मन के स्थान पर आ गया और मनमानी करने लगा वहाँ सिलसिला ख़त्म हो जाता है।

☼ ☼ ☼

आदमी की जिन्दगी का आदर्श यह है कि वह अपनी असल सत्-चित्-आनन्द से मिल कर स्वयँ सत्, चित्, आनन्द हो जाय। इसका साधन यही हो सकता है कि लौकिक और पारलौकिक जीवन को एकसा बनाये, यानी जिसका ध्यान अन्दर करता है उसी को बाहर देखे। अन्दर बाहर एक ही शक्ति एक ही परमतत्व का अनुभव करे। एक में अनेक और अनेक में एक को देखे। अपने में जगत को और जगत में अपने को देखे। हर जगह उसी एक परमतत्व का अनुभव करे। हरेक चीज़ के साथ, चाहे उसका ज़ाहिरी रूप कैसा ही क्यों न हो उसमें उसी परमतत्व को अनुभव करे।

[४]

उपदेश

सब अवतार या पैग़म्बर, चाहे वह किसी देश में हुए हों और चाहे किसी मज़हब से ताल्लुक़ रखते हों—चाहे वे राम हों या कृष्ण, मौहम्मद हों या ईसा या और कोई, हमारे लिये सब एक समान आदरणीय हैं, भले ही उन्होंने अलग अलग

Scanned by CamScanner

रास्ते ईश्वर प्राप्ति के लिये बनाये हों, पर वे सब रास्ते उसी लक्ष्य पर पहुँचाते हैं जो सब का 'एक' है।

☼ ☼ ☼

परमात्मा ज़रूर है लेकिन वह अक़्ल से नहीं जाना जाता। अगर अक़्ल से उसे समझ सकें तो वह परमात्मा नहीं। सिर्फ़ शुद्ध मन उसको अनुभव कर सकता है लेकिन जैसा वह है उसको वैसा ही समझ लेना नामुमकिन है।

☼ ☼ ☼

रूह (आत्मा) परमात्मा का एक बहुत ही नाचीज़ (तुच्छ) हिस्सा है जिसकी मिसाल (उदाहरण) समुद्र और बूँदें से दी जा सकती है। आत्मा ख़ावास (विशेषता, गुणों) में उसी के जौहर (गुण) रखता है। जैसे सोने की हर चीज़ चाहे वह कितने ही कम सोने की बनी हो, सोने के गुण रखती है। आत्मा को समझ लेना ही परमात्मा का ज्ञान है।

☼ ☼ ☼

परमात्मा की शक्ल है भी और नहीं भी है। यद्यपि बिजली की उपमा देना बहुत ही भद्दी मिसाल है लेकिन दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं जिससे परमात्मा या आत्मा की मिसाल दी जा सके। बिजली की शक्ल है भी और नहीं भी है। जब यह किसी स्थूल चीज़ से मिलती है, शक्ल अख़्तियार कर लेती है। इसी तरह जब आत्मा का प्रभाव किसी

Scanned by CamScanner

स्थूल वस्तु पर पड़ता है वह रूप धारण कर लेती है ।

साधारण मनुष्य के अन्दर आत्मा नहीं जीवात्मा कार्य कर रही है । आत्मा और जीवात्मा में फ़र्क़ है ।

किसी को बिना माँगे अपनी सलाह मत दो । अगर कोई तुम्हारी सलाह माँगे तो जो वक्त और मौक़े के मुताबिक़ ठीक समझो उसे बता दो । ऊपर ऊपर सब से ताल्लुक़ रखो मगर अन्दर से अपने को सबसे अलहदा समझो ।

दुःख तब होता है जब हम किसी काम के नतीजे (फल) पर निगाह (दृष्टि) रखते हैं । जैसा नतीजा हम चाहते हैं अगर वैसा नहीं होता तो हमें दुःख होता है । इसलिए जैसी परमात्मा की मौज हो उसी में राज़ी रहे और जितना बन सके भजन, सुमिरन, ध्यान तथा महापुरुषों की बानी का पाठ करे । सत्संग करे और दीन दुखियों की, बड़ों की और गुरुजनों की सेवा करे ।

साँस ख़ाली जा रहा है, सुनहरा अवसर खो रहे हो । क्या इसका अफ़सोस नहीं है ? मनुष्य जन्म और सन्त-मिलन बार-बार नहीं होता । इस वक्त को ग़नीमत जानो और लग लिपट कर अपना काम बना लो ।

Scanned by CamScanner

किताबों को पढ़ने से कभी कभी भ्रम हो जाता है, इसलिये जिस तरह की किताबें जिस अभ्यासी को बताई जावें उसी तरह की पढ़नी चाहिए। अलग-अलग सन्तों में अलग अलग तरीकों से परमात्मा को प्राप्त किया है और हर तरीक़े के क़ायदे और क़ानून भी अलग हैं। इसलिये शुरू में एक ही रास्ते को पकड़ना चाहिये। नदी को एक ही नाव में बैठ कर पार करना चाहिए। एक बार पार हो जाने पर अलग अलग रास्ते चल सकते हैं। उसमें कोई हर्ज नहीं है। मंज़िल देखी हुई हो तो आदमी बहकता नहीं है।

☼ ☼ ☼ ☼

दुःख वहाँ होता है जहाँ हम अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं। अगर हम अपना कर्तव्य समझ कर सब काम करें तो उसमें दुःख न हो, नाते रिश्तेदारों से मोह न हो।

☼ ☼ ☼ ☼

तुम्हारा काम सेवा है, इसे दृढ़ता से पकड़ लो। चाहे कोई विघ्न आये, अपनी ख़ुदी (अहं, Ego) को तोड़ते हुए उस मार्ग पर चलते जाओ।

☼ ☼ ☼ ☼

हमारे देश में अगर कोई गृहस्थ धर्म का ठीक ठीक पालन करे तो शान्ति का रास्ता आसानी से खुल जाता है। अपने स्वार्थ को मार कर दूसरों का उपकार करना यही हमारे यहाँ का रास्ता है। जिस घर में सहयोगिता नहीं

Scanned by CamScanner

है वहाँ शान्ति नहीं है—मन ईश्वर की तरफ़ कैसे जायगा?

✡ ✡ ✡

अपनी देह का गुरु अपने गुरु की देह, अपने इख़लाक़ (सदाचार, आचरण) का गुरु गुरु का इख़लाक़, जीवात्मा का गुरु गुरु की आत्मा है। जो जिस जगह और जिस स्थिति पर अपनी बैठक रखता है उसका गुरु भी उसी मुक़ाम का है।

✡ ✡ ✡

रहना तो इसी दुनिया में पड़ेगा। दुनिया नहीं छोड़ सकते। पहाड़ों पर जाने में, घर बार छोड़ने में दुनिया नहीं छूटती, दुनिया की कुछ चीजें भले ही छूट जायें। मन से दुनिया को छोड़ो। सब काम उसी तरह होते रहेंगे जैसे होते हैं, लेकिन सिर्फ़ भाव बदलना पड़ेगा। हर काम को परमात्मा का काम समझ कर उसकी सेवा करो और इस भाव को स्थायी बना लो। लगातार यही ख़्याल रहे कि जो काम तुम कर रहे हो वह ईश्वर की सेवा है।

✡ ✡ ✡

Cooperate with the Mother प्रकृति माँ के अनुकूल रहो। यह दुनिया और इसके सामान, पुत्रादि, स्त्री, कुटुम्बी, दोस्त अहबाब, सब प्रकृति माँ का रूप हैं। उनसे मिलकर चलो, लेकिन अपने को उनसे अलहदा समझो। कोई हमेशा नहीं रहेगा। लड़का पैदा हुआ है, मरेगा ज़रूर।

Scanned by CamScanner

फिर उससे मोह क्या ? इस तरह विवेक से बन्धन ढीले करते चलो। अपने कर्तव्य पूरे करो और अन्दर से सबसे अलग रहो। परमपिता परमेश्वर को ही अपना समझो और उसी से प्रेम करो। सब प्राणीमात्र की सेवा करो। जो काम भी दुनिया का करो अपने आनन्द के लिये मत करो बल्कि ईश्वर का समझ कर उसको ख़ुश करने के लिए करो। यही attachment (लगाव) है, यही भोग है। उसको duty sake (कर्तव्य समझ कर) करो। यही प्रकृति माँ के साथ मिल कर चलना है।

☼ ☼ ☼

अगले जन्म की बात क्यों सोचते हो ? जो कुछ करना है वह इसी जन्म में कर लो ! आगे न जाने कौन सा जन्म हो। अगले जन्म में ख़वास (स्वभाव) के मुताबिक़ जानवर या पत्थर भी बन सकते हो और देवताओं की योनि भी प्राप्त हो सकती है। यह सब भोग योनियां हैं। कर्म केवल मनुष्य चोले में ही बन सकता है, यानी मनुष्य चोला ही एक ऐसा चोला है जिसमें परमात्मा की प्राप्ति की जा सकती है। यह बार-बार नहीं मिलता। जो कुछ यत्न करना है, इसी में करो। सब बातों से ध्यान हटा कर ऐसी बात में लगाओ जिससे परमार्थ का रास्ता खुले। एक बार रास्ते पर पड़ जाओगे तो वह कमाई बेकार नहीं जायगी। आवरण हटाये जा सकते हैं। हीरा मिट्टी में दब जाय तो उसका

Scanned by CamScanner

कुछ बिगड़ता नहीं। मिट्टी हटा दो, फिर हीरे की चमक वैसी की वैसी ही रहेगी।

भोगने की बनिस्बत भोगने की इच्छा ज्यादा नुक़सान करती है।

जो भी सत्संगी सत्संग में आकर संसार और उनके भोग विलासों की बातें करते हैं, वे अभागे हैं। क्या उन्हें इस काम के लिए अपने घर में फ़ुरसत नहीं मिलती ? अपना रास्ता खोटा करते हैं और दूसरों के लिए रोड़ा बनते हैं। परन्तु ऐसे लोगों से अधिक अभागे वे हैं जो सत्संग में आकर उनकी बातें चित्त देकर सुनते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों पर रहम करे।

कभी किसी की बुराई न करे। जब जब बुराई का ख़्याल मन में आवे तब तब यह सोचे कि अगर तुम्हारे लिये भी कोई इस तरह करे तो तुम्हें कैसा लगेगा। इससे यह ख़्याल टूट जाता है।

जहाँ तक हो सके, अपने सत्संगी भाइयों की या अन्य परमार्थियों की मदद करो, और जो ऐसा न कर सको तो उनका किसी तरह परमार्थी नुक़सान करने की इच्छा मत

Scanned by CamScanner

करो। इन बातों पर चलने से हर सत्संगी की तरक़्क़ी होगी, सत्गुरु ख़ुश होकर उसे प्रेम दान देंगे जो संसार सागर से पार कर देगा।

✡ ✡ ✡

संसार और परमार्थ, दुनिया और दीन, दोनों नहीं मिल सकते। एक को दूसरे पर क़ुर्बान (बलिदान) करना पड़ेगा। अगर दीन (परमार्थ) चाहते हो तो दुनिया तोड़नी पड़ेगी। ···जिसमें सच्ची और पक्की भक्ति होगी वही मालिक के दरबार में पहुँचेगा। ढोंगी और कपटी के लिये मालिक के दरबार में कोई जगह नहीं है।

✡ ✡ ✡ ✡

यह दुनिया धोखा दे रही है। दिखाई कुछ दे रहा है, असलियत कुछ और है। जो असल है वह सिर्फ़ ईश्वर है। उसे पाने की कोशिश करो। जहाँ आपस में मौहब्बत से रह रहे हो वहीं सतयुग है। जहाँ एक दूसरे से भिन्नता रखते हो वहीं कलियुग है। ईश्वरीय जीवन वहाँ है जहाँ सब के साथ सहयोग करते हो।

✡ ✡ ✡ ✡

दुःख बर्दाश्त करने के चार उपाय हैं :—

(१) मजबूरी से दुःख बर्दाश्त करना। यह राज़ी-ब-रज़ा (यथा-लाभ-सन्तोष) नहीं है।

Scanned by CamScanner

(२) दुःख को प्रभु की कृपा समझ कर बर्दाश्त करना।

(३) दुःख आवे तो अपने आपको सराहे और सोचे कि 'हे प्रभु ! तेरी बड़ी कृपा है। न मालूम कितनी बड़ी मुसीबत थी जो तूने इतने थोड़े में ही काट दी। न मालूम सूली पर ही चढ़ना पड़ता जो काँटा ही छिद कर रह गया।

(४) दुःख आवे तो सोचे कि यह मेरे प्रियतम या माशूक़ की तरफ़ से है और उसमें ख़ुश रहे।

असली जिज्ञासु वह है जो सन्त को परमात्मा के प्रेम के लिये प्रेम करे और सच्चा सन्त वह है जो उसे परमात्मा का प्रेम दे सके।

गुरु की जहाँ और पहिचानें हैं वहाँ एक यह भी पहिचान है कि वह सच्चे जिज्ञासु की तलाश में रहता है और इस प्रकार अपने गुरु का ऋण उतारना चाहता है। उसको दुनिया की चाह नहीं होती। जो कुछ न चाहता हो, जिस के पास बैठने से ईश्वर-प्रेम बढ़े, दुनिया की वासनायें कम हों, आन्तरिक अभ्यास करता हो, जो अपनी गाढ़ी कमाई की चीज़ (ईश्वर का प्रेम) बिना स्वार्थ दे दे, जो सिद्धयों को दिखा कर लुभाता न हो और जो एक ही दिन में पर-

Scanned by CamScanner

मात्मा का दर्शन कराने का ठेका न ले, वही सच्चा सन्त है।

☼ ☼ ☼ ☼

किसी वस्तु को देख कर या उसका ध्यान करके उसकी ओर खिचावट (Attraction) होना 'लोभ' है। फिर उस वस्तु से लगाव होना 'मोह' है। बाद में उसे प्यार करना, अपने को उसका स्वामी समझना यह 'अहंकार' है। जब मनुष्य इसमें फँस जाता है तो छुटकारा कठिनाई से होता है। अधिकतर अभ्यासी यहीं अटके रहते हैं।

☼ ☼ ☼ ☼

असफलता की बात भूल जाओ। देखो, जब एम० ए० पास करना हो तो पहिली कक्षा से पढ़ना आरम्भ करते हो और उससे ऊपर की कक्षायें पास करते-करते एम० ए० पास करने में कई साल लग जाते हैं। जब संसार की विद्या प्राप्त करने में कई साल लग जाते हैं तो ब्रह्म विद्या, जो आध्यात्मिक विद्या है उसे प्राप्त करने में जल्दी कैसे हो सकती है? कोई विरला संस्कारी होता है जो इसे एक ही जन्म में प्राप्त कर लेता है वरना पाँच जन्म, या कम से कम तीन जन्म तो जरूर ही लग जाते हैं।

☼ ☼ ☼

किसी स्त्री के मुँह की ओर मत देखो, पैरों की ओर देखो।

☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

किताबों का ज़्यादा पढ़ना बेकार की बातें हैं। पहले सच्चे गुरु की संगति में रह कर दिल की किताब पढ़ लो, उसके बाद किताब से मिलाओ। एक तो सच्चे गुरु का मिलना मुश्किल है, मिल जाय तो लग लिपट कर अपना काम बना लो। व्यर्थ तर्क और विवाद में पड़ कर अपना समय नष्ट मत करो।

☼ ☼ ☼

यहाँ आये हो, सब द्वेष, हिंसा और निन्दा भूल जाने की कोशिश करो। अगर हिंसा और निन्दा ही करनी है तो यहाँ आने से क्या लाभ ?

☼ ☼ ☼ ☼

सन्तों का सत्संग किये बिना आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। जिन लोगों को असली परमार्थ की चाह है उनको चाहिये कि सन्त सद्गुरु की खोज करें और अगर वे सौभाग्य-वश मिल जायें तो उनकी संगति से लाभ उठाकर अपना काम बना लें क्योंकि यह रत्न अनमोल है।

☼ ☼ ☼ ☼

एक के सिवा कुछ नहीं।

नहीं, दो हैं—वह और मैं।

दो नहीं, जब वह है तभी तो मैं हूँ। जब वह, तब फिर मैं कहाँ ? इसलिये वह एक ही है।

☼ ☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

जो परमात्मा को नहीं पूजते वे गिरेंगे । चाहे कितना भी बुरा आदमी हो, लगन से परमात्मा का नाम लेने वाला बहता नहीं है । दीन और दुनिया दोनों बना लेता है । दुनिया में कर्म पूरे कर लेता और दीन भी मिल जाता है । जो किसी पेड़ से रस्से के द्वारा बँधा है वह घूमता भले ही रहे परन्तु गिरता नहीं है । गुरु के प्रेम का, परमात्मा के नाम का रास्सा अपनी कमर में बाँध लो । कितने भी भटको किन्तु रास्ते से हटने नहीं पाओगे ।

✡ ✡ ✡

ख़्याल की कमजोरी ही इन्सान का संशय या भ्रम है । यह मोह, अज्ञान और वहम है । इसी को सन्त सद्गुरु दूर करके जीव को असलियत से परिचित कराते हैं ।

✡ ✡ ✡

हरेक मनुष्य का कर्तव्य है कि जब तक जीवित रहे और हाथ पाँव सही रहें तो अन्त तक अपनी रोज़ी आप कमावे । अगर बूढ़ा है, कोई भारी भरकम काम करने योग्य नहीं है तो हल्का सा काम घर का ही कर ले । जो कमाये वह हक़ हलाल का हो । बच्चे को पढ़ाने या घर की देख-भाल का काम ले ले । कहने का मतलब यह है कि हर आदमी काम करे, हराम की न खाय ।

✡ ✡ ✡

Scanned by CamScanner

हर बात पर मनन करो। उसे पुराने आचार्यों और सन्तों की किताबों से मिलाओ। यदि नहीं मिलती तो समझ लो कि अभी तुम्हारे अनुभव में ग़लती है क्योंकि सद्ग्रन्थ ग़लत नहीं है। फिर विचार करो और उसे समझो। अपने अन्तर में घुसो। जब अन्दर सच्चे रूप से घुस जाओगे तब सभी रहस्य खुल जायेंगे।

हर चीज़ के बारे में सोचो तो देखोगे कि कोई तुम्हारा नहीं हैं। न तुम्हारे साथ आया था न जायगा। यहाँ की कोई चीज़ तुम्हारे काम नहीं आयगी। यह सब फँसाने वाली हैं। न मालूम अब तक तुम्हारी कितनी शादियाँ पिछले जन्मों में हुईं, कितने बेटे बेटियाँ हुए, कितने मकान बने मगर अभी तृप्ति नहीं हुई। यह सब तो होता रहा है और आगे भी हो सकता है लेकिन मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता। इसी योनि में ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है, दूसरी में नहीं। इसलिए इसे अमूल्य जानकर इसका उपयोग ईश्वर प्राप्ति के लिए करो।

उन लोगों से जो निपट संसारी हैं और जिनके मन में सिवाय संसार और उसके भोग विलास की बातों के और कुछ नहीं है, दूर रहें। वे ईश्वर से विमुख रहते हैं और जो कोई उनके सम्पर्क में आयेगा उसे भी वे ईश्वर से विमुख

Scanned by CamScanner

कर देंगे। उनकी संगति में बैठने से तुम इधर उधर की बातें सुनोगे, दुनिया की चीज़ों और भोगों का हाल सुनकर तुम्हारे चित्त में उनकी याद हरी हो जायगी। इससे दुःख पैदा होगा और भजन व अभ्यास के समय भी वे याद आकर तुम्हारी साधना में विघ्न डालेंगी।

कोई भी कर्म जो मालिक से दूर ले जाय 'पाप' है। जो कर्म मालिक की नज़दीकी हासिल करने में सहायक हो वही 'पुण्य' है।

यह अच्छी तरह समझ लो कि जो भी काम करो, अगर उसका फल मालिक की मौज पर छोड़ दोगे तो बन्धन नहीं होगा। कर्म करते हुए अकर्ता हो जाओगे। संचित कर्म धीरे-धीरे कट जायेंगे। आइन्दा (भविष्य) के लिए कर्मभार नहीं चढ़ेगा यानी क्रियमान कर्म नहीं लगेंगे और प्रारब्ध कर्मों का भी ज़ोर बहुत कम हो जायगा।

हर काम का फल ज़रूर मिलता है। अच्छे काम का अच्छा और बुरे काम का बुरा, मगर देने वाला एक ही परमपिता परमेश्वर है। उससे दुनिया मांगोगे, दुनिया मिलेगी दीन मांगोगे, दीन मिलेगा। उससे उसको माँगोगे उसका प्रेम मिलेगा! मगर हर चीज़ की क़ीमत देनी पड़ेगी। अगर

Scanned by CamScanner

उसे (प्रभु) को पाना चाहते हो तो अपने को ख़त्म कर दो। जीते जी मरना पड़ेगा।

☼ ☼ ☼

अगर तुम्हारे सामने कोई किसी की बुराई करता है तो यह समझ लो कि वह तुम्हारी बुराई किसी और के सामने कर सकता है। यह आदत परमार्थ में बड़ी विघ्न डालती है। दूसरों की ऐबजोई (परदोष दर्शन) पाप है। ऐसा आदमी तरक़्क़ी नहीं कर सकता। बुराई करने की आदत छोड़ो।

☼ ☼ ☼

जिस तरह सन्त बहुत कम हैं उसी तरह अधिकारी भी बहुत कम हैं। जो मनुष्य सन्तों के पास आकर कुछ नहीं चाहता, दुनिया की कोई चीज़ नहीं चाहता, सिर्फ़ अपने उद्धार के लिये उनकी शरण ग्रहण करता है, ऐसा आदमी अधिकारी है। ऐसे ही लोगों की तरफ़ सन्त राग़िब (आकर्षित) होते हैं। दुनिया माँगने बहुत आते हैं। सन्तों को वे राग़िब (आकर्षित) नहीं कर सकते।

☼ ☼ ☼

सन्त दुनिया में इतना तो दे देते हैं कि जिससे पेट भर जाय, जीवन निर्वाह हो जाय। मगर जो उससे ज़्यादा प्रेम करते हैं उनका घर उजाड़ देते हैं कि ग़रूर (अभिमान) चला जाय। ओहदेदार की इज़्ज़त ख़त्म कर देते हैं। उनकी शरण

Scanned by CamScanner

में तो वह आये जो अपनी दुनिया को आग लगा दे । इसलिये सन्त से दुनिया मत माँगो, उतना ही सिर्फ़ माँगो जितने में निर्वाह हो जाय । बाक़ी ईश्वर का प्रेम माँगो ।

✡ ✡ ✡

याद रखो कि हरेक का इम्तहान जरूर होता है । बग़ैर इम्तहान पास किये किसी को क़ामयाबी का सेहरा नहीं मिलता । जो पढ़ता है, मेहनत करता है वही पास होता है । जो सन्तों के, गुरु के बताये रास्ते पर चलेगा वही इम्तहान भी पास करेगा, और जो चलेगा नहीं, पास क्या होगा ?

✡ ✡ ✡

सन्त लोग धार्मिक कर्मकाण्ड के बन्धन से ऊँचे होते हैं । हिन्दू मुसलमान का भेदभाव उनमें नहीं होता ।

✡ ✡ ✡

अभ्यासियों को तीन बातें अवश्य करनी चाहिए—

(१) जहाँ तक हो गुरु का सत्संग करें ।

(२) आन्तरिक अभ्यास--ध्यान, भजन, सुमिरन और मनन करते रहें ।

(३) अपने मन के ख़्यालों पर हमेशा निगाह रखें और बुरे ख़्यालों को हटा कर अच्छे ख़्याल क़ायम करते रहें । निश्चित है कि फ़ायदा होगा ।

Scanned by CamScanner

मनुष्य स्वतन्त्र है। वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। अपने कर्मों से चाहे तो वह पशु बन जाय, फरिश्ता (देवता) बन जाय और चाहे मुकम्मिल इन्सान (पूर्ण मानव)।

☼ ☼ ☼

मालिक की याद से ग़ाफ़िल न हो और मन में धीरज रखो। सब उल्टी सीधी हालतें आयेंगी और चली जायेंगी। आँधी आती है, वर्षा लाती है, शीतलता छोड़ जाती है।

☼ ☼ ☼ ☼

ग़रीब से तात्पर्य यह है कि उसके पास किसी और का बल नहीं है। न तो वह संसार के ही किसी योग्य है और न वह परमार्थ की करनी ही भली प्रकार कर सकता है। ऐसे दीन पर मालिक ख़ूब दया करता है और उसके सब काम भली प्रकार बनते चलते हैं।

☼ ☼ ☼ ☼

जिसका कोई हाल पूछने वाला नहीं है और जिसे संसार के तथा उसके पदार्थों से कोई लगाव नहीं है, उस का पूछने वाला परमपिता परमेश्वर है।

☼ ☼ ☼ ☼

यदि घर बार छोड़ने और संसार त्याग देने से ही मुक्ति मिल जाती तो मरते समय तो यह सब अपने आप ही छूट जाता है, क्यों मुक्ति नहीं मिलती ? यदि इसी विधि से मुक्ति

Scanned by CamScanner

होती तो बहुतेरे लोग ख़ुशी से मौत का आवाहन करते। मगर मरने से मुक्ति नहीं मिलती। विरक्त हो जाने और भेस धारण कर लेने से परमार्थ नहीं बनता।

☼ ☼ ☼

स्त्रियों का परदा जरूर होना चाहिए। इसमें बहुत फ़ायदे हैं। पर्दा आँखों का होता है। पुरुषों के साथ बेहयाई से मिलना, आज़ादी से बातचीत करना, कंधे से कंधा मिला कर चलना, यह सब बेहयाई है। पर्दे के हम हामी नहीं हैं लेकिन आँखों का पर्दा जरूर चाहिए। जो इस तरह का पर्दा नहीं रखते उसका बुरा नतीजा उठाते हैं।

☼ ☼ ☼

जब जब मौक़ा मिले, सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो। उनको ख़ुश करो, उनका सत्संग करो, उनके उपदेशों को हित-चित से सुनो। उन पर अमल करने की कोशिश करो। हमेशा पूरी कामयाबी होगी। कभी निराशा नहीं होगी यही सच्चा, सीधा और सहज रास्ता ईश्वर प्राप्त करने का है।

☼ ☼ ☼

ईश्वर का पूजने वाला वास्तव में वह है जो दुनिया की कोई चीज नहीं चाहता, सिवाय उसके प्यार के, और दुनिया की सब चीजें होते हुए भी बग़ैर उसके प्यार के दुःखी है।

☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

उपराम होना यह है कि किसी चीज़ को भोगकर उस से तबियत इतनी भर जाय कि मन इधर-उधर न जाय और उसमें उसको रस न आए।

सन्तमत में मोक्ष की भी इच्छा नहीं रखते। सूफ़ियों में राज़ी-ब-रज़ा का सिद्धान्त अपनाते हैं। जिस हालत में परमात्मा रखे उसी में खुश रहना, उसे सराहते रहना और उस की याद से एक लहमे (क्षण) के लिये ख़ाली न रहना 'राज़ी-ब-रज़ा' की हालत कहलाती है।

परमात्मा की नज़दीकी तो हासिल हो सकती है लेकिन उसकी बराबरी नहीं हो सकती। उसकी बराबरी का दावा करना सरासर गुस्ताख़ी (धृष्टता) है।

ईश्वर एक है। वही सबका मालिक है, दूसरा उसका कोई साझेदार नहीं। यदि वह कृपा करके अपने चरणों में जगह देता है, यही सामीप्य है। अगर कोई शख़्स (व्यक्ति) अपने नौकर से बहुत ख़ुश हो जाय और किसी वक्त उसको अपने बराबर बैठने की जगह दे तो यह उसकी बड़ी कृपा नौकर के ऊपर होगी। मगर क्या इससे नौकर मालिक की बराबरी का दावा कर सकता है? मालिक मालिक ही रहेगा और नौकर फिर भी नौकर ही। अगर नौकर यह कहने लग

Scanned by CamScanner

जाय कि 'मैं मालिक हूँ'' तो यह एक गुस्ताख़ी होगी और इसकी सज़ा उसे मिलनी ही चाहिये।

☼ ☼ ☼ ☼

सूरज से मिलकर एक हो जाने की ताक़त किसकी है? जिसने उसके रूप का दर्शन किया, बेहोश हो गया। तूर के जल्वे की बात सुनी होगी। उसका जल्वा पहाड़ पर पड़ा, टूट कर चकनाचूर हो गया। उसकी नज़दीकी (सामीप्य) हासिल हो सकती है, लेकिन उससे मिलकर एक नहीं हो सकते। हर तरह की किताबें पढ़ लेने से और अपने आपको ईश्वर मान लेने से नुक़सान होता है।

☼ ☼ ☼

हमारे यहाँ का, सन्तमत का लक्ष्य यह है कि अपना एक आदर्श बना लो। उस (आदर्श, गुरु) को सम्पूर्ण रूप में ईश्वर रूप में देखकर अपने आप को उसके समर्पण कर दो, पूरी तरह लय हो जाओ। यही Goal है, यही लक्ष्य है।

☼ ☼ ☼

असली सत्संग यह है कि सत्गुरु की वाणी याद रखे और उसके आदेशों पर चलने का प्रयत्न करे।

☼ ☼ ☼

प्रश्न— दीनता कैसे प्राप्त हो?

उत्तर—सन्तों के चरणों में बैठने से दीनता प्राप्त होती है। सन्त इतने दीन होते हैं कि उनमें बड़प्पन लेशमात्र भी

Scanned by CamScanner

नहीं होता। वे बच्चों की तरह भोले-भाले होते हैं। यदि हम बराबर उनसे सम्पर्क रखें, उनकी सेवा करें, उनके चरणों में बैठें तो उनके स्वभाव का हम पर भी असर पड़ेगा। उन के से गुण आने लगते हैं, दीनता आने लगती है। चन्दन के पेड़ का असर आस-पास के पेड़ों पर भी पड़ता है, उनमें भी ख़ुशबू आने लगती है।

सबका मालिक एक ही है। वही बाप है, प्यारा बाप है। उसे सिर्फ़ अपने शुभ अशुभ कर्मों का जज ही मत समझो उसे सच्चा बाप समझो। वह भूत, भविष्य सब जानता है, सर्वशक्तिमान है। वही सही मायने में जानता है कि हमारी भलाई किस में है। उसी पर निर्भर क्यों न रहो, उसी में तुम्हारी भलाई है।

जब किसी सन्त के साथ सोओ तो ऊसके ख़्याल में सोओ। सन्त का स्थान बहुत ऊँचा होता है। उसाका ध्यान करने से साधक को भी उसी घाट का लाभ होता है। सन्त की आत्मा मन के परदों से न्यारी हो चुकी होती है। जो कोई उनका ख़्याल करते हैं। उनकी आत्मा भी ख़्याल के सहारे उँची उठ जाती है। सन्त के साथ रात को जागता रहे और बाहोश (चैतन्य) रहे तो उसका बड़ा गहरा असर होता है।

Scanned by CamScanner

दुनियाँ की चीजों के लिए यत्न करना बहादुरी नहीं है वह तो तुम्हारे लिए पहले से निश्चित हैं। तुम्हें मिलेंगी ही। जो इससे उपराम हो गये हैं उन्हीं के लिये सन्तमत है। सन्त उनसे कहते हैं—"आओ, हम तुम्हें रास्ता बतायें, हम तुम्हारी मदद करेंगे और ईश्वर भी तुम्हारी मदद करेगा। मगर पुरुषार्थ तो तुम्हें करना ही पड़ेगा। आत्मा का रूप समझने के लिए शरीर, मन, बुद्धि और अहंकार का पर्दा हटाना ही पड़ेगा। तब आत्मा का दर्शन होगा क्योंकि आत्मा इन सब से दबी हुई है।"

अपने प्रेम को परमात्मा के प्रेम की आग में तपा लो,। फिर उसकी मैल कट जायेगी और वह प्रेम अनन्त बन जायेगा।

जहाँ वासना मौजूद है, किसी स्वार्थ को लेकर किसी से प्यार है, वह बदलने वाला है। अगर उसे परमात्मा के प्रेम में सराबोर कर दो, ईश्वर की भक्ति में उसे रंग दो तो वह बढ़ता जाता है—न बदलता है न घटता है। इसमें दोनों का भला है। जिससे प्यार करोगे उसका भला है और अपना भी भला है।

Scanned by CamScanner

हमारे यहाँ का रास्ता सबसे सरल और सीधा है। यह प्रेम का रास्ता है। सब अवतार और पैग़म्बर हमें प्यारे हैं। लेकिन रास्ता हमारा वह है जो हमारे वंश के महापुरुषों ने दिखाया है। सब की नसीहत अच्छी है। सब में से अच्छाई को छाँट लो---(Take good from all)। अगर किसी की कोई चीज़ तुम्हें पसन्द नहीं आती तो उसकी बुराई मत करो। प्रेम का रास्ता सबसे छोटा और सरल रास्ता है।

☼ ☼ ☼

जो कर्म किये हैं उनका फल अवश्य मिलता है, लेकिन अगर परमात्मा के चरणों का आश्रय लिये रहोगे तो कर्म आसानी से कट जायेंगे और आगे के संस्कार नहीं बनेंगे।

मन जिन चीज़ों का अभ्यस्त हो जाता है उनको आसानी से नहीं छोड़ता, उनका चिन्तन करता रहता है और अवसर मिलने पर उनको भोगता है। अतः जिन चीज़ों को आप बुरा समझते हैं, कोशिश कीजिये कि वे आपके सम्पर्क में न आयें वर्ना कोशिश करने पर भी आप उनसे नहीं बच सकेंगे।

☼ ☼ ☼

ब्रह्मविद्या के अभ्यास के लिए ज़रूरी है कि साधन भी हो और साथ ही साथ गुरु का सत्संग। बग़ैर दोनों बातों को लिये हुए रास्ता तय नहीं हो सकता। जिसने अभ्यास को

Scanned by CamScanner

जरूरी समझा और सत्संग को त्याग दिया उसकी बुरी हालत हुई।

☼ ☼ ☼

शमा जल रही है, यह परवाने के लिए पैग़ाम है कि आये और जले और जिन्दगी हासिल करे। उसका जलना ही लोगों को बुलाना है। अगर मक्खी नहीं आती और दूर रहती है तो इसमें शमा का क़सूर है या मक्खी का? गुरु का तो दया का हाथ हर वक्त है और हर वक्त उसकी ख़्वाहिश है कि साधक सीधे रास्ते पर आ जाय। लेकिन जब तक साधक दुनिया की वासनाओं को नहीं छोड़ता, उसको हाथ नजर नहीं आता।

☼ ☼ ☼

जो अभ्यास गुरु ने बताया है उसे करते रहो और गुरु में विश्वास रखो। दुनिया के मामलों में ज्यादा मत फँसो। तबियत को शान्ति मिलेगी और आनन्द मिलेगा। यही असली फ़ायदा अभ्यास का है।

☼ ☼ ☼

परमात्मा है और अवश्य है। अगर हम अपने दोष दूर करना चाहते हैं तो उसका ध्यान करना भी जरूरी है। उसके लिये जो साधन गुरु ने बताया है वह उसी की पूजा का है। विश्वास परमात्मा में और बताये गये साधन में होना चाहिए। गुरु तो केवल एक जरिया है।

Scanned by CamScanner

परमात्मा की मदद उसको मिलती है जो ख़ुद कोशिश करते हैं। लिहाजा ख़ुद मेहनत करो, फल मिलेगा।

☼ ☼ ☼ ☼

परमात्मा के प्रेम के सभी अधिकारी हैं। जिसमें भी मनुष्य की आत्मा है वही उसका अधिकारी है। इनमें लाखों में से एक भी निराश नहीं जाता है। परमात्मा तो हर वक्त गोद फैलाये हुए तैयार बैठा रहता है, सिर्फ़ उसकी ओर जाने की जरूरत है। निराशा के ख़्याल को अपने दिल में जगह न दें, इससे कमज़ोरी आती है। उसमें विश्वास रखिये, जरूर कामयाबी होगी। जरूरत इस बात की है कि जो बात (गुरु द्वारा) बताई जावे उस पर अमल करने की कोशिश की जाय क्योंकि गुरु रास्ता चल चुका है, वह उसकी गुलत्थियों और रास्ते से वाक़िफ है।

फ़ारसी का एक शेर है— "ब मय सज्जादा रंगीं कुन अगर पीरे मुग़ाँ गोयद"—अगर तेरा गुरु कहे कि अपने पूजा के कपड़ों को (जो बहुत पवित्र हैं) शराब से (जो अत्यन्त अपवित्र है) रंग दे, तो तुरन्त वैसा कर डाल, क्योंकि रास्ते का जानने वाला उसके ऊँच नीच से ख़ूब परिचित है।

मतलब यह है कि गुरु यदि धर्मशास्त्र के विपरीत भी कोई काम करने को कहे तो कर डालना चाहिये क्योंकि वह ख़ूब जानता है कि उसमें साधक का क्या हित निहित है।

Scanned by CamScanner

गुरु पर विश्वास करके और उसे अपना हितैषी जान कर उसके कहने पर चलना चाहिये। इसी का नाम 'विश्वास' है। ऐसा करने से ईश्वर प्रेम मिलेगा। प्रेम ही सीधा और सच्चा रास्ता है। यदि आरम्भ से ही गुरु की आज्ञा मानने में तर्क-वितर्क किया जायगा कि अमुक बात जो बताई गई है वह क्यों और किस लिये की जाय, तो सफलता मुश्किल से होगी क्योंकि आरम्भ में बात न तो समझ में आ सकती है और न समझाई जा सकती है। कोशिश करने और विश्वास रखने की ज़रूरत है। ज़रूर कामयाबी होगी। फ़ुरसत की कोई भी साँस उसकी याद से ख़ाली न जाने दीजिये।

✡ ✡ ✡ ✡

दुनिया में सब कामों के लिये समय मिलता है लेकिन नहीं मिलता तो राम का नाम लेने के लिये समय नहीं मिलता? और, सिवाय राम-नाम के कोई काम नहीं आता। इसी मूर्खता में तमाम संसार फँसा हुआ है और तुम भी फँसे हुए हो! अगर जीवन का कुछ लाभ उठाना चाहते हो तो इस मूर्खता को दूर करो और जहाँ तक सम्भव हो (गुरु का) सत्संग करो जिससे उन्नति हो। इस रास्ते में अपना बल कुछ काम नहीं देता। राम नाम जो सच्चे दिल से लिया जाय उसकी महिमा सबसे ज़्यादा है। सत्य का पालन करो

Scanned by CamScanner

दुनिया के झगड़ों से दूर रहो, तभी कुछ फ़ायदा हो सकता है।

☼ ☼ ☼ ☼

असली फ़ायदा यह है कि अन्तर का शब्द जारी हो जाय जिससे आगे का रास्ता स्वतः खुल जाता है। पूजा में सुहावने दृष्यों को देखना या अद्भुत शक्तियों का आ जाना असली फ़ायदा नहीं है। असली फ़ायदा यह है कि मन 'सत्' पर आ जाय और दिल में परमात्मा का प्रेम प्रकट हो।

☼ ☼ ☼ ☼

प्रेम सेवा से बढ़ता है। गुरु के शरीर की सेवा शरीर से करो, रुपये-पैसे से सत्संग की मदद करो, दिल से सब की भलाई चाहो, गुरु के स्वास्थ्य और उद्धार के लिये परमात्मा से प्रार्थना करो, गुरु जो काम बतावें उसे चाव से और मन लगा कर करो। इससे गुरु के दिल में मौहब्बत और ज्यादा पैदा होगी जिसका असर तुम पर पड़ेगा और तुम से प्रेम बढ़ेगा।

☼ ☼ ☼

असली प्रेम वह है जो दूसरों की भलाई के लिए हो और उसमें अपना स्वार्थ कुछ भी न हो। इस हिसाब से सिवाय ईश्वर के और उन भक्तों के जो उनमें लय हो चुके हैं और ईश्वर के गुण हासिल कर चुके हैं, और कोई सच्चा प्रेम नहीं कर सकता।

Scanned by CamScanner

परमात्मा ने तुम्हारी तक़दीर पहले ही लिख दी है। उसे कोई भी शक्ति मिटा नहीं सकती और न बना सकती है। ज़िन्दगी अपने कर्मों से बनती है। इसलिए अगर ख़ुश रहना चाहते हो तो ईश्वर का नाम और उसी के ध्यान को अपने जीवन का मुख्य कर्तव्य समझो। बाक़ी जो कर्तव्य तुम्हारे सुपुर्द हैं अर्थात् रिश्तेदारों की मदद और उनकी सेवा, उसको पूरा करो। जो काम करो, ईश्वर को ख़ुश करने के लिए करो। हर काम में उसका भरोसा रखो। इससे तुम्हें उस का प्रेम मिलेगा और उसी का प्रेम असली प्रेम है। वही जीवन का सार है।

☼ ☼ ☼

जीवन सुख से बिताने का तरीक़ा यह है कि जो कर्तव्य ईश्वर ने तुम्हारे सुपुर्द किया है उसे पूरा करो और कोई ग़रज़ किसी से न रखो। ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो और उसी से प्रेम करो, तभी सुख मिल सकता है, वरना हमेशा दुःखी रहोगे।

☼ ☼ ☼

कोई किसी को न सुख पहुँचाता है और न दुःख। सब उस मालिक की मर्ज़ी से होता है। परमात्मा ही सच्चा बाप है, और वह इतना प्यार करता है कि हम उसका अनुमान भी नहीं कर सकते, परन्तु अन्धा प्राणी उसकी तरफ़ देखता भी नहीं—इसीलिये दुःखी है। तुम उसकी ओर देखो

Scanned by CamScanner

तब तुम्हें मालूम होगा कि वह कितना प्यार करता है। सबका प्यार करना धोखा और स्वार्थ है।

सब प्रार्थनाओं का एक लक्ष्य है और वह यह है कि ईश्वर के चरणों में अटूट अनुराग पैदा हो जाय। संसारी दुःख-सुख आते जाते रहते हैं परन्तु धर्म पर चलने वाला मनुष्य सदा उनसे ऊँचा उठ जाता है और अपने प्रीतम परमेश्वर से उनका नाता संसार की कठिन से कठिन परिस्थितियों के बीच भी नहीं टूटता। यही सच्चा प्रेम है। यह स्थायी होना चाहिए, अर्थात् चाहे मालिक सुखी रखे या दुःखी उसमें विश्वास न खो बैठे। इस प्रकार का नाता पहले गुरु से जोड़ा जाता है, तत्पश्चात् ईश्वर से।

सन्ध्या में तबियत का लगना इस बात पर निर्भर है कि मन दुनिया से कितना उपराम है और परमात्मा से कितनी लगन है। जितनी लगन ज़्यादा है और वैराग्य है उतना ही परमार्थ बनेगा। सत्संग में शामिल होकर भी मन का न लगना इस बात का सबूत है कि अभी मन दुनिया की इच्छायें रखता है--परमात्मा से प्रेम नहीं रखता। जितना परमात्मा से प्रेम बढ़ता जायगा, आदमी दुनिया से उपराम होता जायगा।

Scanned by CamScanner

गुरु तुम्हारे अन्दर है और इच्छायें-वासनायें भी तुम्हारे अन्दर हैं। जब इच्छायें सामने आ जाती हैं, गुरु हट जाता है और जब इच्छायें हट जाती हैं, गुरु सामने आ जाता है। जैसे, चन्द्रमा चमक रहा है लेकिन आँखों पर उँगली रखने से वह दिखाई नहीं देता। उँगली हट जाने पर चन्द्रमा दिखाई देने लगता है। जब इच्छायें मन में पैदा होती हैं, गुरु-प्रेम जाता रहता है। जब इच्छायें जाती रहती हैं, गुरु-प्रेम आ जाता है। इसे समझो और मनन करो, असलियत समझ में आ जायेगी।

गुरु की हार्दिक इच्छा होती है कि उसके प्रेमी-जन उसके जीवन-काल में ही आत्मा का अनुभव करके हमेशा हमेशा की ख़ुशी हासिल कर लें। मगर, वह मजबूर है। जब तक इच्छाओं-वासनाओं की समाप्ति नहीं हो जायगी, आत्मा का अनुभव नहीं हो सकता और हमेशा की असली ख़ुशी नहीं मिलती। इसलिए हर समय कोशिश करते रहो और अपने मन को इच्छाओं से ख़ाली करते रहो। यही असली रियाज़त और अभ्यास है।

आदमी जो काम करता है उसकी छाप मन पर पड़ती है और जब मन बाहर से हटकर सोते समय या पूजा करते समय अपने अन्तर की तरफ़ घुसता है तब वह शक्लें सामने

Scanned by CamScanner

आती हैं। इसलिए अभ्यासी को चाहिये कि दुनिया के साथ व्यवहार करते समय चौकन्ना रहे और उन्हीं चीज़ों से वास्ता रखे जो ज़रूरी हैं। बेफ़ायदा बातों और कामों में अपने आप को न फँसाये। ऐसा अभ्यास करते रहने से मन सन्ध्या के समय और ख़्याल नहीं उठायेगा। दूसरे, मन को समझाना चाहिये कि यह दुनिया तो थोड़े दिन की है, सब चीज़ों को छोड़ना है, इनसे दिल नहीं लगाना चाहिए वर्ना छोड़ते समय बड़ा दुःख होगा। तीसरे, अपने गुरु या परमात्मा के लिए प्रेम की आग जगाना चाहिए। इसका तरीक़ा यह है कि विरह के पद गाये जावें जिससे तड़प पैदा हो।

☼ ☼ ☼

मन बाहरी चीज़ों का रसिया है। शुरू में अन्दर की तरफ़ मोड़ने में इसको दुःख होता है और इससे वह भागता है। लेकिन अभ्यास करते रहने से और बाहर से तबियत हटा देने से अन्दर की तरफ़ ठहरने लगता है और अन्तर में ठहरने से उसे अभ्यास में आनन्द आने लगता है। मन जन्म जन्मान्तर से बहिर्मुखी है, अन्तर में घुसने के लिए इसे समय की ज़रूरत है। इसलिये घबराना नहीं चाहिए, दृढ़ता से काम करते रहना चाहिए।

☼ ☼ ☼

हमें दूसरों की त्रुटियाँ क्यों दिखाई देती हैं? क्योंकि हमारे स्वयँ के अन्तर में त्रुटियाँ होती हैं, तभी दूसरों के

Scanned by CamScanner

अवगुण दीखते हैं। यदि अपना मन स्वच्छ, सात्विक और कामनाओं वासनाओं से मुक्त हो, तब दूसरों के अवगुण कम ही दीख पायेंगे। यदि किसी में त्रुटि दीखती है और वह वास्तव में ठीक है तो ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु ! उस मनुष्य को इन त्रुटियों से मुक्त करो।

✡ ✡ ✡ ✡

जितना अधिक मनुष्य क्रोधी होगा उतना ही उसके अन्तर में अधिक अहंकार छिपा हुआ होगा। क्रोध भले ही न आये, परन्तु यदि कोई ऐसी बात हो भी जाती है जो मनुष्य की इच्छा के अनुकूल नहीं होती और वह अन्तर ही अन्तर में दुखित होता है, यह अवस्था भी नीची है। परमार्थी की ऐसी अवस्था हो जानी चाहिए कि वह हर परिस्थिति में प्रसन्नचित्त रहे, चाहे कोई बात अपने अनुकूल हो या प्रतिकूल हो।

✡ ✡ ✡

मैं नहीं समझता कि यदि कोई व्यक्ति वास्तव में ईश्वर के लिये तड़पता है और वह किसी सच्चे सन्त के पास जाये, फिर उसे धोखा मिले ? धोखा दुनियादारी में है।

✡ ✡ ✡

दुनिया में इतना फँसे जितने में कम से कम काम चल सके, जितना कम से कम ज़रूरी हो। किसी काम को करने से पहले ख़ूब अच्छी तरह सोच ले कि क्या यह काम वास्तव

Scanned by CamScanner

में जरूरी है, क्या इसके बिना काम नहीं चलेगा ? अगर जरूरी है तो करे वर्ना छोड़ दे ।

✡ ✡ ✡ ✡

भक्ति बढ़ाने के लिए सबसे ऊँचा तरीक़ा यह है कि मन के फन्दे से बचे और ईश्वर से नाराज़ न हो । ज़रा गर्मी हो जाय तो कहने लगते हैं 'हाय बड़ी तपन है ।' कभी बारिश ज्यादा हो गई तो लगे परमात्मा को कोसने । यह सब बुरी बातें हैं । परमात्मा के सब काम सर्वहित के लिए होते हैं । वह जो करता है, सब अच्छाई के लिए ही करता है । लेकिन उसके कामों को अपने मन की कसौटी पर परखते हो । जिस हाल में वह रखे उसी में ख़ुश रहो । उफ़ भी न करो— कोई ख़्वाहिश न उठाओ । 'शुक्र' वही है कि अगर तकलीफ़ भी हो रही है तो उसकी सराहना करो । हर समय राज़ी-ब-रज़ा रहो ।

✡ ✡ ✡

गुरु ने जो दिया है । उसको ईश्वर का नाम समझ कर जाप करते रहो, लक्ष्य तक पहुँच जाओगे ।

✡ ✡ ✡

जिस आनन्द से मनुष्य की तृप्ति न हो और ख्वाहिशात बनी रहें, वह मन का आनन्द है । मन के आनन्द में एक आनन्द के बाद दूसरे आनन्द की ज़रूरत होती है । ऐसा आनन्द Temporary (अस्थायी) होता है और Indepen-

Scanned by CamScanner

dent (स्वतंत्र) नहीं होता। इसका आधार किसी दूसरी वस्तु पर होता है। आत्मा स्वयँ आनन्द है, उसका आनन्द Permanent (स्थायी), Everlasting (सदा क़ायम रहने वाला) होता है। उसका आधार किसी दूसरी वस्तु पर नहीं होता। वह आनन्द इतना ऊँचा होता है कि उसके सामने दूसरा आनन्द कोई मायने नहीं रखता।

☼ ☼ ☼

अपना रूप समझो। आत्मा को मन से हटाओ, वासनाओं से रहित हो जाओ। जब आत्मा के ऊपर का परदा हट जाएगा फिर तुम अपना असली रूप देख सकोगे कि तुम कौन हो? तुम तो ईश्वर ख़ुद हो। जब तुम अपने आप को पहचान जाओगे तब किसकी पूजा करोगे? तुम स्वयँ आनन्द हो, आनन्द की तलाश कहाँ करते हो?

☼ ☼ ☼

दुनिया से सिर्फ़ उतना ही ताल्लुक़ रखो जितने में काम चल जाय। ज़्यादा मत फँसो। लाला जी (मेरे गुरुदेव) कहा करते थे कि तुम्हें ख़ुश रहने का गुर बतायें। वह गुर यह है कि अगर एक जूता मौजूद है तो दूसरा ख़रीदने मत जाओ। कहने का मतलब यह है कि जब एक चीज़ से काम चल सकता है जो दुहैरी-तिहैरी चीज़ें मत खरीदो। जितने उनमें attach (लिप्त) रहोगे उतने फँसोगे।

☼ ☼ ☼

Scanned by CamScanner

अपने आपको सब का सेवक समझ कर, गुरु में ईश्वर का रूप देखकर, सब चीज़ों को गुरु की कृपा से मिली समझ कर चलते जाओ। मन से पूछते चलो 'यह कैसे हुआ' और जवाब देते जाओ 'गुरु कृपा से ऐसा हुआ'। रास्त सुगम हो जायगा।

मन दुनिया का रसिया है और दुनिया की चीज़ों में आनन्द पाता है। उसका क़ुदरती स्वभाव दुनिया के विषयों की तरफ़ है और उसी तरफ़ मनुष्य को ले जाता है। जब आत्मा अपने निजी आनन्द को भूल कर अज्ञान-वश विषयों में आनन्द समझने लगती है तो अपने आपको और अपने प्रीतम परमात्मा को भूल जाती है और आवागमन के चक्कर में फँस जाती है। एक साथ मन दुनिया के विषयों को नहीं छोड़ता और उस तरफ़ ले ही जाता है लेकिन अगर उसमें आत्मा आनन्द न ले और अपने परमात्मा की तरफ़ फिर जाय, या स्वयँ उसको अपना अनुभव हो जाय तो फिर दुनिया के विषयों में उसको आनन्द नहीं आता और उनसे तृप्ति हो जाती है। आहिस्ता-आहिस्ता मन भी उन विषयों को छोड़ देता है।

परमात्मा के दो रूप हैं। एक जो घट-घट वासी है और दूसरा रूप उसका स्थूल है जो गुरु है। शुरू-शुरू में स्थूल

Scanned by CamScanner

रूप से सम्बन्ध जोड़ा जाता है। फिर आहिस्ता-आहिस्ता कारण रूप परमात्मा से सम्बन्ध हो जाता है और इस तरह आसानी से अभ्यासी बहुत जल्दी परमात्मा के प्रेम का पात्र बन जाता है। परमात्मा का प्रेम आते ही बुराइयाँ दूर होने लगती हैं और अन्त में सिवाय उसके प्रेम के और कुछ नहीं रहता। यही मोक्ष और मुक्ति है।

☼ ☼ ☼

कोशिश करते रहने पर भी, परमात्मा का ध्यान करते रहने पर भी, अगर कोई बुरा काम हो जाता है तो समझ लो कि पहले कर्मों का फल है। इससे घबराओ नहीं।

☼ ☼ ☼

गुरुजन हाथ पकड़ कर छोड़ा नहीं करते।

☼ ☼ ☼

बुरे कामों के लिए पछताओ और आगे के लिये प्रण करो कि फिर ऐसा नहीं करेंगे। बच्चे जब चलना सीखते हैं तो शुरू में गिरा ही करते हैं। गिरना बुरा नहीं है, मगर गिर कर न उठना बुरा है।

☼ ☼ ☼

असली अभ्यास यह है कि जो ग्रन्थि मन की वजह से पड़ गई है, खुल जाय और आत्मा आज़ाद हो जाय। बग़ैर मन के क़ाबू किये यह ग्रन्थि नहीं छूटती। मन का क़ाबू में करना बहुत मुश्किल है और सब यत्न इसी के लिये किये

Scanned by CamScanner

जाते हैं। इसको प्यार की रस्सी से गुरु के साथ बाँध देते हैं। शुरू-शुरू में ये बहुत उछल कूद करता है लेकिन जितना प्रेम का रिश्ता मजबूत होता जाता है उतनी ही उसकी उछल कूद कम होती जाती है और एक दिन पूर्ण रूप से गुरु के आधीन हो जाता है और तब ही आत्मा का प्रकाश पूर्ण रूप से होता है। बग़ैर मन के पूर्ण रूप से शान्त हुए आत्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता। इसके लिये गुरु का सत्संग बहुत मददगार है। जब जब मौक़ा मिले, गुरु का ज़ाहिरी सत्संग करना चाहिए, और जब दूरी हो उस समय सुरत-शब्द का अभ्यास करते रहना चाहिए।

☼ ☼ ☼ ☼

अधम-अधम कहते रहने से उद्धार नहीं होगा। जहाँ आप पुराने कर्म भोगने के लिए मजबूर हैं वहाँ साथ ही साथ अपनी आयन्दा तक़दीर बनाने के लिये भी आप आज़ाद हैं। इसलिए अपने कर्मों से आप अधम हैं तो आत्मा के लिहाज़ से आप शक्तिशाली हैं और जो चाहें सो कर सकते हैं, सिर्फ़ हिम्मत बाँधने और कर्म करने की ज़रूरत है और इसी के लिए गुरु धारण किया जाता है।

☼ ☼ ☼ ☼

अपने मन पर कभी भरोसा न करे। यह बड़ा धोखे-बाज़ और मक्कार है। काम शक्ति को रोकना इन्सान की शक्ति से बाहर है। अवतारों ने इसे शुद्ध तो किया लेकिन

Scanned by CamScanner

मारा नहीं, सूक्ष्म रूप में क़ायम रखा। इसलिये जब तक ज़िन्दगी क़ायम है, इससे हमेशा होश्यार रहो वर्ना ऐसे गड्ढे में फेंक देगा जहाँ से उठना नामुमकिन हो जायगा।

☼ ☼ ☼

एक कर्म कटने नहीं पाता कि सैकड़ों नये कर्म आ घेरते हैं। इनसे छुटकारा पाना अगर नामुमकिन नहीं तो नामुमकिन-सा ज़रूर है। प्रभु की कृपा बग़ैर गुरु कृपा के नहीं होगी और गुरु-कृपा बग़ैर निज-कृपा के नहीं होती। निज-कृपा यह है कि 'सत्' पर चलो जिससे मन शुद्ध हो। मन के शुद्ध होने से बुद्धि शुद्ध होती है। बुद्धि की शुद्धि से सच्चा ज्ञान मिलता है, और बुद्धि अपना रास्ता ख़ुद निकाल लेती है। 'सत्' के रास्ते पर चलने से हमेशा-हमेशा की शान्ति मिलती है और ऐसा भरपूर आनन्द मिलता है जो कभी ख़त्म न हो और जिसके बाद किसी और आनन्द की इच्छा ही शेष न रह जाय। ऐसा आनन्द मिलने पर सब इच्छायें लय हो जाती हैं और मनुष्य आवागमन से छूट जाता है। यही निर्वाण पद और यही मोक्ष है।

☼ ☼ ☼ ☼

'सत्' का रास्ता यह यह है कि सच्चाई से अपना जीवन बिताओ। इसमें छै बातें ज़रूरी हैं :—

१. सच्चा विश्वास—सच्चा विश्वास यह है कि इस

Scanned by CamScanner

बात का पूरा यकीन हो जाय कि अपने भाग्य के निर्माता आप स्वयं हैं।

२. हक़-हलाल की कमाई—जो कुछ जायज़ तरीक़े से मिलता हो उसी में गुज़र करना।

३. सच्ची मोहब्बत—जो लोग ईश्वर भक्त हैं उनकी संगत। (गुरु-प्रेम)

४. सच बोलना।

५. सच्चा कर्म—जिस काम से दूसरों का भला हो, सच्चा कर्म है।

६. सच्ची याद-दाश्त—जो गुरुदेव से सुना है या जो गुरु-बानी पढ़ी है, या शास्त्रों में लिखा है उसे कर्म करते वक्त याद रखना।

इन छै 'सत्' पर चलने से परमात्मा से प्रेम पैदा हो जाता है और दुनिया से उपरामता पैदा होती है। फिर बुद्धि ख़ुद ही अपना सच्चा रास्ता निकाल लेती है। साधक जितना आगे बढ़ता जाता है उतनी शान्ति और आनन्द प्राप्त होता है। यही देवासुर संग्राम है जो एक जन्म नहीं कई कई जन्म चलता है। मजबूत इच्छा शक्ति और अटल विश्वास की ज़रूरत है जो अभ्यास से पैदा होती है। रास्ता

Scanned by CamScanner

लम्बा और मुश्किल है। लाखों आदमियों में से कोई एक ही इस पर चलने की कोशिश करता है। लाखों चलने वालों में से कोई एक दो क़ायम रहते हैं और जो आख़ीर तक क़ायम रहता है वह कामयाब होता।

हम सबको अपने कर्मों का भोग भोगना पड़ता है। जो उनमें बह जाता है वह आवागमन के चक्कर में फँस जाता हैं। जो दुनिया में रहते हुए भी और सब काम करते हुए, अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हुए, अपनी आत्मा को परमात्मा के चरणों में लगाये रहते हैं, यानी परमात्मा का प्रेम रखते हैं और दुनिया के सुख दुःख को नाशवान समझ कर उसमें नहीं फँसते, अपने पिछले संस्कारों को आसानी से भोग लेते हैं और आगे के भी संस्कार नहीं बनते और मोक्ष के अधिकारी बन जाते हैं।

मन समुद्र के समान है, इसमें ज्वार भाटा आता ही है। कभी आगे बढ़ता है तो कभी पीछे। जब मन को बाहर से हटाकर किसी चीज़ पर ठहराया जाता है तो आनन्द मालूम होता है। लेकिन जब चढ़ाई ऊपर को होने लगती है तो देवासुर संग्राम शुरू हो जाता है। ऐसी हालत में अभ्यासी को घबराना नहीं चाहिए।

Scanned by CamScanner

गुरु में परमात्मा का अथाह प्रेम भरा हुआ है। वह चाहता है कि इसका हिस्सा तुमको भी दे और मोक्ष का अधिकारी बनाये क्योंकि परमात्मा के प्रेम के बग़ैर कोई मोक्ष का अधिकारी नहीं बन सकता, लेकिन जब वह तुम्हारे दिल में ईश्वर प्रेम डालना चाहता है तो तुम्हारे दिल में स्त्री और आल-औलाद व धन-इज्जत की बेशुमार ख़्वाहिशात (इच्छायें) भरी रहती हैं इसलिए इश्वर प्रेम तुम्हारे दिल में असर नहीं करता। अगर तुम दरअसल मौहब्बत के इच्छुक हो तो अपने दिल को दुनिया की मौहब्बत से ख़ाली कर दो ताकि उसमें ईश्वर प्रेम का बीज बोया जा सके। गुरु और परमात्मा का प्रेम दो नहीं है, एक है। परमात्मा और गुरु दो नहीं, एक हैं और उनका प्रेम भी एक ही है।

एक कहूं तो है नहीं, दूजा कहूं तो जार।
जैसा है तैसा रहे, कहें कबीर विचार॥

✿ ✿ ✿ ✿

सन्त मत का आधार सिर्फ़ सत्गुरु पर मुनहसिर (निर्भर) है। अगर इसके समझने में ग़लती हो गई तो तमाम इमारत नेस्तनाबुद (मटिया मेट) हो जायगी और ख़ातिरख़्वाह (जैसा होना चाहिए) फ़ायदा नहीं होगा।

१. सन्त-मत में लक्ष्य उस आदि शक्ति का बाँधते हैं जो सब का आधार है। उस तक पहुँचने का ज़रिया (साधन)

Scanned by CamScanner

सत्गुरु है ।

२. 'सत्गुरु' वह है जो दयाल देश से जीवों के उद्धार के लिये पैदा हुआ हो या वह जिसने ऐसे गुरु की सौहबत में रह कर आत्मा का साक्षात्कार कर लिया हो । उसको मुराद, गुरुमुख, आचार्य वग़ैरा भी कहते हैं । हमारे सिलसिले में तहरीरीरी इजाज़त (लिखित आज्ञापत्र) देते हैं ।

३. एक वक़्त में एक सोसायटी में सिर्फ़ एक ही गुरु होता है ।

४. जगह-ब-जगह तालीम देने के लिए मास्टर, मानिटर मुक़र्रिर (नियुक्त) कर देते हैं । बाज़ मौक़ों पर उनसे उपदेश भी दिलवा देते हैं लेकिन इससे वे गुरु नहीं हो जाते । गुरु सिर्फ़ एक ही होता है और चाहे किसी के ज़रिये उपदेश दिलवाया जावे लेकिन वह मुरीद (शिष्य) एक ही गुरु के माने जाते हैं ।

५: अपनी ज़िन्दगी में एक या दो, और बाज़ मौकों पर उससे भी ज़्यादा मानीटरों को उपदेश की इजाज़त दे देते हैं । बाज़ों के साथ इसमें शर्त लगा देते हैं और बाज़ों के साथ कोई शर्त नहीं लगाते हैं ।

Scanned by CamScanner

६. लेकिन हर हालत में मौजूदा गुरु की ज़िन्दगी में दूसरा कोई उपदेश नहीं दे सकता। उपदेश की इजाज़त मौजूदा गुरु के विसाल (निर्वाण) के बाद अमल में लाई जाती है।

७. ख़ास हालतों में इजाज़त मंसूख (निरस्त) भी कर दी जाती है और बाज़ हालतों में यह ख़ुद जाती रहती है।

८. हमारे सिलसिले में गुरु की शक्ल का ध्यान करने की बहुत कम इजाज़त देते हैं।

९. (यदि बताया जाय तो) सिर्फ़ गुरु की ही शक्ल का ध्यान करना चाहिए, मानीटर या मास्टर या जिसकी मार्फ़त उपदेश लिया है उसकी शक्ल का ध्यान नहीं करना चाहिए।

१०. तालीम गुरु से ही लेनी चाहिए लेकिन वक़्त ज़रूरत मास्टर या मानीटर यानी सत्संगी या साध से मदद ली जा सकती है लेकिन इजाज़त (आज्ञा) लेकर। किसी भी सूरत में गुरु को Over-Look (उपेक्षित) नहीं करना चाहिये। उससे सिलसिला (सम्बन्ध) बराबर क़ायम रखना चाहिये।

११. गुरु से ख़ौफ (भय) रखना अच्छा है लेकिन इस वजह से अपनी हालत को न कहना ग़लती है।

Scanned by CamScanner

भण्डारे में बहुत से सत्संगी नहीं आते। आचार्य उनके ख़्याल को ख़ूब जानता है कि कौन किस वजह से नहीं आता है। वह इतना ग़ाफिल नहीं है। अपने एतक़ादात (विश्वास) को सही करो।

✡ ✡ ✡ ✡

ख़्याल दो का नहीं किया जाता सिर्फ़ एक का ख़्याल करना चाहिये।

✡ ✡ ✡

जिसको तालीम की इजाज़त दी जाती है उसको ख़िद-मत (सेवा) सुपुर्द की जाती है, न कि इज़्ज़त। जो इस ख़िदमत को ठीक तौर पर अंजाम दे पाते हैं, सहज ही में गुरु कृपा और परमात्मा की कृपा हासिल कर लेते हैं और उनका परमार्थ बन जाता है।

✡ ✡ ✡

✡ ✡
✡
✡ ✡

Scanned by CamScanner

सागर के मोती

सन्त के पास बैठकर आनन्द का अनुभव होता है। अगर सौभाग्य से ऐसा कोई वक्त का पूरा सन्त मिल जाय वही 'गुरु' है। वह तुम्हें भवसागर से पार करने आया है। उससे प्रेम करो।

× × × × × ×

गुरु कृपा तब तक होती है जब तक उसके कहने में चलते हो वरना वह कृपा जाती रहती है।

× × × × × ×

एक बूँद में ही सागर है। जहाँ आत्मा बूँद रूप में मौजूद है वही ईश्वर सागर रूप में मौजूद है।

× × × × × ×

असली सत्संग यह है कि सद्गुरु की वाणी को याद रखे और उनके आदेशों पर चलने का प्रयत्न करे।

× × × × × ×

ईश्वर उनकी सहायता करता है जो स्वयं पुरुषार्थ करते हैं और उसकी ओर चलते हैं।

—परमसन्त डा० श्रीकृष्णलाल जी महाराज

Scanned by CamScanner